राँची धर्मदेश के
संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसमाज की उत्पत्ति

❖

1 [1]17 वीं मार्च 1885 ईस्वी में छोटा नागपरु का महा प्रेरित मान्यवर प्यारे फादर कोन्सटनटेन लीवन्स ये.स. रांची पहुंचे हैं। [2]वह यहाँ पहुंचकर कुछ महीनों के लिए डुरुंडा में वास करके रोज 2 इधर उधर सैर को जाकर आदमियों से कुछ 2 बातचीत करते 2 अनेक लोगों को काथोलिक गिर्जा में भरती करने लगा और एतवार 2 थड़पखना के जैल रोड के एक बगंलो में पवित्र मिस्सा करता था। [3]जब उसे अपने प्रधान फादर से आज्ञा मिली के आप तोर्पा जाइये, तब वह यहाँ से तोर्पा पधारे। [4]जब प्यारे फादर तोर्पा पहुंचे तो उस के रहने के लिए घर द्वार कुछ भी न था इसलिए वह एक ख्रिस्तान आदमी के घर में रहा जब तक कि अपने वास्ते एक कच्ची घर न बना चुका था।

2 यहाँ छोटानागपुर में काथोलिक पुरोहितों के आने के अगाड़ी ही प्रोतेस्तन्त लोग लूथेरन और अंग्रेजी मिशन के लोग अपने धर्म फैला दिए थे।

3 जब फादर लीवन्स तोर्पा में रहकर काथोलिक धर्म का प्रचार करने लगा तब चारों ओर से लोग भीड़ का भीड़ क्या लूथेरन क्या अंग्रेजी मिशन, क्या संसार, उरांव, मूनडा और खड़िया जाति के लोग उस पास दौड़ आते थे। पांच ही वर्ष में इतने ख्रिस्तानों की बढ़ती हुई कि प्यारे फादर लीवन्स, प्यारे फादर जोनह डिसमिट स. ज. तथा दूसरे 2 साथी फादर लोग जो थे सो कलकत्ते के आर्च विषप महा मान्यवर प्यारे पौल गोथौल्स से यह तेज़2 अर्जी करने लगे यह बोलकर, कि आप कृपा करके प्यारी लोरेटीन मादर और सिस्टरों को भेजिए, जो यहाँ आकर लड़कियों के लिए स्कूल खोलें और धर्म की भी शिक्षा देवें तो हम लोग के कामों की खूब सफलता होगी। जरुर महामान्यवर विषप स्वामी जी ऐसे खुशहाल की खबर पाये तो उसने बिन देर किए तुरंत ही लोरेटो मादरों से यह मांगा कि रांची में उन की कोनवेंट खोली जाए, जहॉ लड़कियॉ कुछ लिखने पढ़ने का ज्ञान प्राप्त तो करेंगीं परन्तु विशेषतः प्रश्नोत्तर उन्हें अधिक सिखलाई जाये। मान्य लोरेटो मादर लोग जिन का दिल भी ईश्वर के बड़े प्रेम से इतने ज्वलित हैं प्यारे लाट विषप की ऐसी तेज चाहत मालूम करके तुरन्त ही इस धर्म काम को करने में उद्धत हुई हैं। उन्हीं दिनों पर कलकत्ता में लोरेटीनों की प्रोविंसयल मदर मेरी गोनजागा जोयनट नामक थी। वह अपनी सिस्टरों के बीच में से चार अच्छी–2 मादरों को चुन लिया, वे ये हैं रॉची की प्रधानी मादर मेरी गोनजगा, मादर मेरी पत्रिसीया, मादर मेरी अलोयसिया और सिस्टर तेरेसा थीं। ये पहली मादर लोग हैं जो इस छोटानागपुर की गरीब लड़कियों और आत्माओं को यीसु की अस्ल गिर्जा में बटोर लाने के लिए भेजी गई है।

4 ये चार जन आज्ञा पाकर शीघ्र ही रवाना हुई हैं। उन्हीं दिनों में यहाँ न रेलगाड़ी थी न तो रिक्षा पिक्षा कुछ भी न था। पुरुलिया से इधर पुस पुस नामक गाड़ी जिस में हरजुहाट में पांच या छः कुली लोग जुट जाकर रात दिन दौड़ते और सुबह को केवल प्रायः पचहत्तर मील तय करके राँची पहुंचते थे। बहुत मुशकिलता से जंगल पहाड़, बाघ भालुओं को खदेड़ शोर गूल मचाते हुए बिचारे कुली लोग अपने काम पूरा करके कुछ–2 पैसा लेकर चले जाते थे, तब बदली होकर दूसरे कुलियाँ आ धमकते थे। प्यारी मादरों को यहाँ राँची आने जाने में बहुत ही कठिनाई झेलनी पड़ती थी मगर यीसु के प्रेम से सदा सब कुछ करने को तय्यार थीं। वे आखिर मे तब 19 मार्च 1890 को रांची पहुँची हैं। प्यारी मादर लोग यहां आकर एक दम फुर्ती से कामों में लग गईं। फादर लोग इधर उधर से लड़कियों को इकटठा करके स्कूल में भेजने लगे। स्कूल में लड़कियॉ कभी 2 ''400,500'' के लगभग जमा होती थीं। बहुतेरी जंगली और निर्बुद्धि लड़कियाँ थीं परन्तु उन के बीच में से कई एक कुछ 2 समझदार थीं क्योंकि फादर लोगों ने मादरों के यहाँ आने के डेढ़ वर्ष के पहले ही से लड़कियों को कुछ शिक्षा दिलवाते थे। फिर भी यह कि सन्त जोन्ह का स्कूल लड़को के वास्ते खोला गया था।

5 जब लड़कियाँ दिन रात मादरों के साथ रहकर उनके निज मुंह से धर्म की बात सीखने , उनके प्रेमी और मीठी बातों का मजा चीखने, और उनकी ऐसी धार्मीक सुचाल इत्यादि ठीक मन दिल देकर देखने लगीं तब वे भी मादरेां को बहुत ही प्रेम और आदर करने लगीं। होते–2 दो तीन वर्ष के अन्दर ही में कोई 4 लड़कियॉ अपने मन में यह बिचार करने लगीं कि ***अगर ये मादर लोग यीसु के प्रेम से अपने प्यार बाप, मां, भाई बहिन, मित्र और कुटुम्बों को, हां अपने निज देश ही तक भी त्याग देकर इस जंगली देश में आकर हम***

अनजान गरीब और नीच जातियों को इतना प्रेम दुलार करके, हमारी आत्माओं को स्वर्ग में पंहुचाने के फिक्र से दिन रात इतनी मिहनत किया करती हैं तो क्या हम लोग भी इन्हीं के सुन्दर नमूनों के अनुसार अपने देश और जातियों की भलाई के लिए नहीं करेगी ? ये लड़कियाँ अपने दिल में यह खूब समझकर और सब सीखने की तेज इच्छा से मादरों के सब रीत नीत और बात कामों पर विशेष तौर से चित्त देकर देखने लगीं। वे इस इच्छा की पूर्ति के लिए दिन कहीं जो जैसी ही काम, बात आ निकले अर्थात् बच्चों को सिखलाना,पढ़ाना, दुःख बिमारी में उनकी सेवा टहल करने इत्यदि में मादरों को मदद देने के लिए दिन रात कहीं जो जैसा ही काम,बात आ निकले अर्थात् बच्चों को सिखलाना पढ़ाना, दुःख बिमारी में उन की सेवा टहल करने इत्यदि में मादरों को मदद देने के लिए लग जाती थीं। शुरु में इन लड़कियों का गुप्त सोच किसी को मालूम न था। कुछ पीछे महा मान्यवर प्यारे डिसमिट और एक दो मादरों को जान पड़ा है। जब लड़कियाँ चौदह पन्द्रह वर्ष की हुईं तब माता पिता और भाई कुटुम्ब लोग सादी की बन्दोवस्त के लिए जोर करने लगे इसी घड़ी से सदा ही न मंजूर करती थीं, तब से सारा गुप्त सोच सभों को मालूम होने लगा। इस न मंजूरी के कारण उन्हें नाना भांति का केल्श उठाना पड़ा है। इधर उधर सब कोई बोलने लगे कि क्या तमाशे की बात उठती है यह तो हो ही नहीं सकती है।कई एक फादरों ने भी इन लड़कियों के माता पिता से कहते थे कि तुम लोग किस प्रकार के हो जो अपनी बेटियों को इस देश के नियम बिरोध चलने देने मांगते हो, सो खबरदार 2 ऐसे मत करो, अपनी बेटियों को इस संकराईता से चलाओ और बेंत मारने से भी पीछे मत हटो। अगर तुम लोग उन्हें अपने मतलबों से चलने दोगे, तो हमारे मिशन का काम बिल्कुल रुक जायगा, हां शायद 20 या 30 वर्षों के बाद केवल यह बात हो सकेगी पर अभी नहीं इत्यदि....। यहां एक बात बतलाई जाती हैः— जब कि हम लोग स्कूल की छुट्टी में घर गईं थी तो पिता ने कहा कि देख बेटियो मैं रोमन लिपि सीखना चाहता हूँ, हाँ कुछ2 अक्षरों को पहचानता हॅ पर चिट्टी लिखना पढ़ना मुझ से न बन पड़ता। इधर उधर के फादरों से मुझे कुछ चिट्टी इत्यदि आती है तो मैं आप उसे पढ़ न सकता हूँ। ऐसा ही बात कि बात में एक रोज कोई फादर से पिता के लिए चिट्टी आई तो उस ने खोल कर देखा कि रोमन लिखित है तो वह मुझे पुकार के कहा कि ''बेटी जरा इसे पढ़कर सुना दे'' तब बेटी ने उस के हाथ से चिट्टी लेकर पढ़ना शुरु की। आरम्भ में तो किसी मुकदम्मे के विषय में बात थी, पर पीछे केवल अपनी बेटियों की ओर से पिता को घुड़की दिई गई थी। पिता यहॉ तक दुःखित हुआ कि चिट्टी की पढ़ाई खत्म होते ही कहने लगा कि ''बस बस अब मुझे सब कुछ ठीक मालूम हो गया है'' कहकर उस ने मेरे हाथ से चिट्टी ले लिया। पीछे वह मौका पाकर बेटी से कहने लगा कि अभी तुम को आप से ठीक से मालूम हुआ है इसलिए तुम अपना मतलब को बदल डालो। बेचारे माता पिता को बड़ा मुशकिल हो गयां उन लोग क्या कर सकेंगें ? लड़कियां तो इधर अपने मतलबों में ढीठ रहतीं और उधर चारों ओर से नाना प्रकार की निन्दा सुनने पड़ती है। फादर लोग भी लड़कियों का अपने मतलबों से डिगाने के वास्ते खूब कोशिश किये। वे उधर से कई बार लड़कों को मादरों के पास भेजते थे, देखने और पूछने को कि उन से विवाह करें। मादर, हम लोगों को एक एक करके उन के सम्मुख लाकर पूछती थी कि सादी करना खुश है या नहीं ? अन्त में एक रोज सहा न जाने से मेरे मुंह से यह बात निकली कि मादर को खूब मालूम हे मैं विवाह करना ही नहीं चाहती हूँ और इस लिए मुझे ऐसे लड़कों के पास ले आना ठीक नहीं बुझाता है । भला आप तो हमारे देश का दस्तूर नहीं जानती हैं सच बात है परन्तु क्या ये लड़के भी नहीं जानते हैं? मैं स्कूल की लड़की तो हूँ सच बात, पर याद करना है कि अनाथ नहीं हूँ। अगर अनाथ होता तो स्कूल में रहते ही मुझ पर आप लोगों का पूरा अधिकार रहता था। फिर भी ये लड़के क्योंकर यहां आ सकते हैं लड़की चुन लेने के वास्ते। हम या कोई दूसरी लड़की, उन का बाहिरी रुप रंग देख कर हाँ हूँ करेंगी। लड़की क्या जानती है कि वह कैसा दिल या स्वभाव का है और फिर उस का घराना कैसे—2 लोग हैं इत्यदि....। यह सब कुछ तो माता पिता और भाई कुटुम्बों से पहला देख सुन कर बिचार करना होता है इसमें बन्दोवस्त ठीक 2 बने या बिगड़े सो उन का काम है। आप लोग कृपा करके मुझे लड़कों के पास फिर कभी मत लाइये मैं साफ से कहती हूँ कि सादी न करुँगी।

6 अन्त में जब सब यत्न निष्फल ठहरा तो फादर लोगों ने कलकत्ते के आर्च विषप पौल गोथोल्स के यहाँ नालिश करके बोले कि देखिये हमारे मिशन के कामों में ऐसी2 हालत हो रही है। अगर यह काम शुरु से न रोका जाय जो हम लोगों का सब काम बिगड़ जायगा। अभी छोटा नागपुर में शुरु 2 ही काथोलिक धर्म

स्थापित होने की चारों ओर बड़ी धूम मच रहा है और लड़कियाँ यदि इस तरह का बेवकूफी काम करें कि हम सादी न करेंगी, हम कुँवारी रहेंगी इत्यदि2 तो कैसा बनेगा। आदमी लोग अपनी2 बेटियों को स्कूल भेजना पसन्द न करेगें, डर के मारे कि कदाचित उन की लड़कियां भी पहिलों की लीक पर चलने मांगेगी इत्यदि2। आप कृपा करके यह कीजिये कि जो 2 लड़कियां इस मन की हों सो स्कूल से निकाल दिई जाकर घर भेजी जाय तो ठीक होगा। हम लोग सोचते हैं कि ये लड़कियां मादरों से बहुत ही लाड़ प्यार पाती है और शायद इसी कारण उन्हें छोड़ देना न चाहती हैं।

7 जरुर ऐसी खबर पाकर प्यारे लाठ बिषप जो धर्म फैलाने की ऐसी तेजस्वी थे शीघ्र यह फरमान निकाले कि जो 2 लड़कियां सादी करना न चाहती हैं वे स्कूल से निकाल दी जाय। तब जरुर प्यारी लोरेटीन मदरें इस आज्ञा को कैसे न मानें। जरुर क्या फादर और मादर लोग हम लोगों को प्यार नहीं करते थे? निश्चय प्रेम करते थे हां सच्चाई से खोलकर स्वीकार करती हैं कि माता पिता से भी बढ़कर प्रेम करते थे। इसमें हमारी बात के माने यह नहीं कि प्रत्येक फादर और मदर ही ऐसे हैं। दुन्या में कहां सुख अैर चैन पूरा हो सकता है, यहां पारादीस कैसे हो? जहां दुःख और लड़ाई, तहां तो चैन और जीत भी होती है। परमेश्वर ही ने यह सब होने दिया है।

8 प्यारी मादर लोग अपनी प्यारी लड़कियों को पास बुलाकर प्यारे लाठ बिषप का हुक्म कह सुनाई समझाई और प्रेम से असीस देकर स्कूल से विदा कर दीं। अब बेचारी बेर्नादेत करे क्या? आह मारती, आसुं की धारा बहाती हुई शिषक रो 2 कलप कर घर चली गई। अब हम लोग किस के पास जायें कि हमें आड़ और दिलासा मिले? प्यारे लाठ बिषप, फादर और मादर लोग सब के सब प्रायः सहमत थे। कोई एक प्यारे फादर और मादर लोगों का दिल तो चूर्ण सा हो गया पर तौभी वे हमारी आत्मिक भलाई के प्रेम से उस दुःख को ईश्वर के पास चढ़ाए हैं। घर में भी प्रतिदिन माता पिता, भाई बहिन, कुटुम्ब और साथियों की ओर से हमेशा दिल की चूर्राता। सारी पृथिवी जैसा हमारे लिये अंधेरी रात बन गई थी। ऐसी निराश दशे में दिल बिल्कुल सूख जा, मुंह मलीन होकर सब काम और खान पान की रुचि जाती रही। ऐसी दुर्दशा पर घर में रहते ही तीन बार पिता को चिट्टी के द्वारा अर्ज बिन्ती किई, कि हे बाप, आप दया करके हमलोगों के वास्ते फादरें से बात बिचार करके ठीक कीजिये, जिसमें हमलोग ईश्वर की सेवा के वास्ते सदा कुवांरी रह सकें। हम लोग निर्बुद्धि के काररा से सिस्टर हो नहीं सकती हैं तो मादरों की सेवा अवश्य कर सकेंगी। पिता चिट्ठी का उतर कभी न दिये पर सदा अनजान से रह गये। कई दिनों तक चिट्ठी के जवाब का असरा देखती 2 थक गई। अन्त में एक रोज सांझ को पांच सात के हाजिरी में पिता से अर्ज करने लगी। तब पिता समझा कर कहने लगे कि ''बेटी तुम्हारी हठ जिददाई अजीब तरह की है सो हम नहीं बूझ सकते हैं। तुम कहां तक मूर्ख उल्लु हो !! पशु जानवर तो नौ2 दहि ताता, हतुरे गुतुरे को समझता है पर तुम लोग नहीं बूझती हो। देखो तुम लोगों के काररा से सब कोई हम पर थूकते, चारों ओर की निन्दा और शर्म से हमारा माथा, नवा जाता है सो तुम्हें न मालूम?

9 देखो यहां लूथेरान धर्म में भी कई एक लड़कियाँ सादी न करेंगी कहकर कुछ वर्षों तक रही थीं पर पीछे वे एक न बचीं, सब के सब खराब बर्बाद हुई हैं। तुम मेरी बातों को सुनकर अपने मतलब को एकदम बदल डालो, नहीं तो और ही ज्यादा ढीठ करके मन मोताबिक चलकर बर्बाद होवोगे तो मैं सच्चाई से कहकर कह देता हूं कि मैं तुम्हें अपने निज हाथों से ही बन्दूक या पिस्तूल दे दूंगा या तलवार से काट टुकड़े कर डाल मैं अपना निज जान भी मारुंगा इत्यदि।'' पिता की इन बातों को सुन मैं वहां से दूर हो एक अधेंरी कोठरी में जाकर खूब आंसू की धारा बरसाई और बिन खाये पीये ही पलंग पर लेट गई। घर के लोग मुझे खाने के लिये बहुतेरा पुकारे परन्तु मैं अनसुनी सी हो रही। जब मैं न उठी तो वे सोचे कि अब वह पूरे तौर से सो गई, है और मुझे छोड़ दिये। वे बाहर बैठ कर आपस में तरह 2 की बातें करने लगे, सो सब मैं चुपके से सुन लिई। घराने के लोग मुर्ख अनपढ़ तो नहीं थे, पर वे शिक्षित और धर्म के भी जानकारी थे। इस काररा उन्हों में के कोई कहने लगे कि लड़कियों का बिचार बहुत 2 ही उतम तो है। कोई दूसरा कहता कि हमारी स्वदेशीय बेटी

बहिनों के लिये जीवन भर कुंवारी रहना असम्भव ही है। कोई तीसरा कहता कि बच्चपन और नवयुवास्था में उन का जी हर तरह के सुख से परिपूर्ा है, माता पिता, भाई बहिन और कुटुम्बों का प्रेम, पालन पोषरा, कपड़ा लता सब कुछ ठीक है इसलिये वे भविष्य के सुख दुःख से अनजान हैं। चौथा कहने लगा, कि अब इतने दिनों तक जो बात हुई सो हो गई है, अब ये सब बातों को फिर मुंह मे न लाना, बल्कि बड़े प्यार दुलार के साथ उन्हें चलाना चाहिये और उन को मगन रखने के लिये सोनार से कुछ 2 गहना सिंगार बनवा कर लड़कियों को पहिनाना उचित है इत्यदि 2। ऐसे कहकर वे एक दिन सोनार को घर में बुलाये और उसे गहने का नाप और नमूने देकर बोले कि तुम जल्दी से बनाकर लाना। वह तब जाके आठ दस दिन में तैयार करके लाया। जब लड़की ने सोनार को आते ही देखी, तब वह झट से बागान की झाड़ तले जा छिपी हुई बैठकर चुपचाप से वहां रोने लगी, यह सोच के कि अभी मुझ पर और एक परीक्षा आ पहुंचा है। इधर माता पिता लड़की की खोज में लग जाकर उसे पुकारने लगे, पर कहीं उस का पता नहीं। तब ऐसा कुछ देर तक वे लड़की का आस्रा देख रहे पर वह न आती है। सो वे सोनार के हाथ से गहनों को वापस लेकर उसे बिदा किये। पड़ोस की सलोमी नामक एक बूढ़ी, छोटी 2 लकड़ी चुनती हुई वहां आ पहुंची, जहां लड़की छिपी बैठी थी। उसे देख कर बूढ़ी बोल उठी! तू यहां क्यों छिपी बैठी री रही है? घर के लोग तुम्हारी खोज में हैं। वे लोग सोनार से कुछ2 गहना बनवाए और तुझे पहिनना चाहते है।'' लड़की उत्तर दिई '' मां ! मैं गहने पहिनना पसन्द नहीं करती हॅ क्योंकि उस से मेरा दिल और आत्मा दुन्या की ओर झुक कर अन्त में बर्बाद हो जाएगा।'' बूढ़ी फिर कहने लगी कि नहीं नहीं बेटी, कुछ न होगी, माता पिता बड़े प्रेम से देते है, तुम अभी जवान होती है और अब तक तेरे हाथ और कानों में सिंगार नहीं है, यह ठीक न लगता, इसलिए मां बाप जो देते हैं सो प्यार से लेना उचित है इत्यदि.....।'' लड़की ने फिर कही–''हे बूढ़ी मा! मुझ पर दया कीजिए और मेरे बिचवाई होकर माता पिता से कह दीजिए कि मैं उन्हें सारे जी जान से सब कुछ के लिए खूब2 धन्यवाद देती हूॅ और सदा देती रहूंगी, परन्तु मैं सादी करना और गहना इत्यदि सिंगार पहनना मंजूर नहीं करती हूॅ। मैं देखती हूं कि मा बाप मुझे बहुत ही प्रेम करते तो है, पर इन बिषयों में मैं उन की इच्छा कभी न मांनूगी। मैं आप, अभी तुरन्त उनके पास जाना ठीक नहीं समझती हूॅ क्योंकि उन से अभी कुछ बोलूं तो वे बहुत ही रुष्ट होवेंगी।'' ऐसे बैठ का आपस में बातचीत करने के पीछे बूढ़ी, लड़की की बातों में सहमत हो उठ खड़ी हुई और अपनी लकड़ियों को ले कर घर चली गई। लकड़ियों को घर में रखकर सीधा मां बाप के पास गई और उन से कहने लगी कि देखिये, आप लोग बेटी को ज्यादा दि्क न देना, वह झाड़ी में जा छिप कर बहुत रोती कलपती है। मैं ने उसे खूब2 समझाई पर वह न मानती है। वह बोलती है कि सादी न करुंगी, गहने न लेंगी, जो चाहती हैं वे पहन सकती हैं तो ऐसी2 बातें बोलती है सो आप लोग उसे रहने दीजिए, शायद पीछे2 आप लोगों की बात मान जाएगी, नहीं तो जोर जुल्म करने से किधरु चल देगी तो अधिक दुःख का काररा होगा इत्यदि2। इस बूढ़ी के मुख से खबर पाकर तुरन्त मां ओर कोई2 जाकर लड़की को वहां से निकाल लाए और मुख हाथ धुलवाकर खाना पीना दिये हैं। खाना हो चुकने के बाद कोई2 बहुत ही लड़की को तुच्छ करने लगे, कहकर कि भला इस का तमाशा तो देखिए, झुण्ड के भीतर जाकर ऐसी रोती कलपती है, इसलिए कि मां बाप उसे सिंगार देने मांगते है। हम सब कोई कैसे चाहते हैं कि हम को दिया जाय 2 ।'' और वह खाना पीना छोड़कर कूढ़ती है। यह निपट पागल मूर्ख नहीं है तो और क्या है पर लड़की उन की बातों की कुछ परवाह न किई हैं।

10 यहां कुछ बात लिखना उचित जान पड़ता है–पूर्ाप्रसाद घराना समेत पहिले लूथरान था। जब कई एक काथोलिक फादर लोग पहले पहल छोटानागपुर में आए तो उन्हों से मुलाकत होकर उनके मुख से सच्ची धर्म की बात सुनकर वह और दूसरे 2 बहुतेरे काथलिक गिर्जा में भर्ती होने की तेज ईच्छा प्रगट किई। इसी काररा लूथेरान साहब और सब दूसरे बड़े2 लोग डाह से जल के उन के विरोधी हो गए हैं। वे नाना प्रकार के दोष पूर्ाप्रसाद पर लगाके मिशन के डेराखाने से निकाल दिये। वर्षा के दिनों में बेचारा अपनी स्त्री बालबच्चों को लेकर कहां जायगा? तिस पर भी जुल्म से निकाला गया। वह इधर उधर भटकता फिरता एक गरीब बढ़ई के डेवढ़ी में डेरा पाया। आँधी पानी से बचाव के लिए बांस की ठठरी बांध कर रहने लगा जब तक कि वह आप कुछ जमीन मोल लेकर घर न बनाया। अब जो बढ़ई बेचारा, पूर्ाप्रसाद को डेरा करने की जगह दिई थी

उसे भी लूथेरान लोग बैरी जानने लगे। ऐसा तब रकम 2 की निन्दा दोष लगाकर एक एतवार को अपनी बड़ी गिर्जा में सभों के सम्मुख जोर से पुकार दिया गया कि आज की तारिक से फलाने 2 नाम के लोग ;छः जन मंडली में बाहिर किये जाते हैं, सो कोई भी उन के साथ उठकी बैठकी, चूना तमाकू और खान, उन से हाथ मिलावट करना या नमस्कार तक भी मना किया जाता है। यदि कोई यह आज्ञा न माने तो उन्हें भी भारी सजा होगी। इस हुक्म को सुनाने के बाद वे इतनी कठोराई करने लगे कि जो कोई जरा से भी अपने को काथोलिक दिखावे या रोमी पादरियों से बात करते देखें, उन्हें मिशन के हाते में पैर धरने तक न देते थे। अगर कोई जरा से प्रवेश करे तो उन्हें अपने चौकीदारों के द्वारा खदेड़ देते थे। जब इतना सख्त हुक्म जारी किया गया तब बेचारे भाई कुटुम्ब और साथी लोग क्या कर सकेंगे। सब कोई तो बुरे नहीं थे पर जब कभी अवसर पाते तो बहुधा एकान्त में और विशेषकर रात में भेंट मुलाकत करने पाते थे। दिन भर लोगों के साम्हने बेर भाव और घृणा की दृष्टि उपरले मन से दिखाते थे। हां बहुतेरे बिषैले नाग के सरीखे थे जो सदा ताकते रहते थे कि इन्हें नाश कर डाले। तौभी ईश्वर की बड़ी दया से काथोलिक नौ चेले उन्हों का कुछ परवाह न किए हैं।

11 कुछ पीछे तब प्यारे फादर लीवन्स आये डुरुण्डा में टिक कर एतवार एतवार ठड़पखना के एक बंगलों में प. मिस्सा किया करते थे। पूर्णाप्रसाद और कई दूसरे 2 फादर के साथ बातचीत करके और भी प्रगट रुप से काथेलिक हो गये।

12 खीस्त आनन्दित रुत नामक पूराप्रसाद की जेठी बेटी लूथेरान स्कूल में थी। उस की छोटी बेटी उम्र के काररा पिता शुरु में उस पर इतना ध्यान न दिया पर उसे सीखने के लिये वहीं छोड़ दिया था। जब लड़की 9,10 वर्ष की हुई तब लूथेरान धर्म दिल में गहरी जड़ जमने लगी। अपने माता पिता के धर्म छोड़ना और काथोलिक होने का पूरा पता उसे मालूम हो गया । वह दिल में बहुत ही दुःखी हो कुछ उपाय सोचने लगी। अन्त में एक दिन लूथेरान साहेब ने जो स्कूल की रक्षा किया करते, उन्हों के पास जाकर सिर नवाए उन की पाल पुत्री होना स्वीकार किई और रहने लगी। जब 2 स्कूल से कुछ अवसर पाती, तब2 मां बाप के पास दौड़ जाकर उन्हें बहुतेरा समझाया करती थी बोल कि आप क्यों रोमी धर्म में प्रवेश किए हैं। सारी मराडली आप लोगों को तुच्छ और घृणा करती है सो समझ लीजिये कि ईश्वर ही आप लोगों को घृणा करता है। इतने धर्म की बातों को जानने पर भी जान बूझ कर नरक में जाने मांगते हैं। मैं सुनती हूं कि रोमन पादरी लोग आये हैं। वे अच्छे आदमी नहीं हैं। लम्बे 2 वस्त्र पहिनते, गली कोचा में घूमते फिरते और बिल्कुल झूठ धर्म प्रचार करते हैं। फिर वे नाना प्रकार की मूर्तियों और तस्वीरों को रखते और मरिया को ईश्वर करके मानते और पूजा करते हैं उनके साम्हने बत्ती जलाते और फूल इत्यदि चढ़ाते हैं। आप लोग खबरदार रहिये, ऐसे ईश्वर विरोधी धर्म पर कभी न रहना चाहिये। अपने किये पर पछतावा करके तुरन्त ही अगले धर्म में लौट आइये। सारी मंडली के साम्हने क्षमा और दया मांगिये तो सब कुछ ठीक होगा इत्यदि.....। बार 2 लड़की ऐसी कहती जाती थी पर वे इस की एक न सुनकर सब कोई हंस उठते थे। उल्टे उसी को काथोलिक बनने को उसकाते थे। जब 2 लड़की को किताब पकड़ी हुई आती देखते तब 2 घराने के लोग हंस के बोल उठते थे कि जल्दी 2 उपदेश सुनने के वास्ते आइयो क्योंकि लूथेराइन प्रेरितिन आती है और खाली ठट्ठबाजी में उड़ाते थे। ऐसी हालत देखकर मैं नाराज हो उन से कही कि यदि आप लोग ऐसे लापरवाही होकर मेरी एक न सुनते हैं तो मैं ही आप लोगों से अलग हो जाती हूँ। आज से लेके आप लोग मुझे कभी अपनी याद तक भी न लाना। ऐसी बातें उच्चार के आगे से निकल गई और अन्दाजी अढ़ाई वर्ष लों फिर स्कूल में रह गई।

13 बेचारी निर्बुद्धि लड़की ! वह कैसे जानेगी कि कौन धर्म सच और कौन धर्म झूठ है। केवल इतना मालूम कर सकती है जितना शिक्षकों के द्वारा सुने और झूठी किताबों से पढ़े। माता पिता लड़की की चाल ढाल देखके बड़ी चिन्ता में पड़े। उस के मन को काथोलिक धर्म की ओर लाने की मतलब से वे कई बार छोटा प. कुस, तस्वीर स्कापूलर और रोसारी देते थे, परन्तु शिक्षक लोग पवित्र कुस और तसवीरों को अपने वास्ते रख देते और बाकी सब यह रोमी धर्म का क्या झन्त्र मन्त्र चीजें हैं कह कर आंख के साम्हने सब जला देते थे। इन सब करतूतों को देखने से जरुर करके दिल में और अधिक काथोलिक धर्म की और घृणा उत्पन्न होती

थी। बात की बात में पूर्याप्रसाद अपनी बेटी को उस स्कूल से निकालने की तेज अभिलाषा से कई मित्रों को साथ लिये लूथेरान साहब के पास गया। साहब उन्हें आते देख दूर से ही बाघ के समान गर्ज कर कहने लगा कि ''तुम कौन हो, क्यों बिन छुट्टी पाये यहां हमारे हाते को अशुद्ध करने के लिये आते हो। सीधे उल्टे पांव फिर जाओ नहीं तो मैं तुम्हें चाबुक लगा¬गा, चौकीदार ! हे चौकीदार ! इन रोमन लोगों को यहां से निकाल दो।'' पिता ने उत्तर दिया कि मैं अपनी लड़की के वास्ते छुट्टी चाहता हूं। साहेब बोल उठा कि तुम चोर है, अपनी बेटी को अपने धर्म से निकाल लेकर नष्ट करने चाहते हो, यहां से निकल कर एकदम चले जाओ।'' बंगलो के पास इतना कोलाहल सुन हम लोग सब चौंक पड़ीं पिता अपने पाचों साथियों समेत स्कूल के निकट आकर पुकारने लगा ''हे बेटी खिस्तआनन्दित रुत, निकल आ हम तुझ को लेने आए हैं।'' बेचारी लड़की डर से थर थर कांपती रोती हुई कमरे के अन्दर कोने में जा दुबक बैठी और रोने लगीं तब किसी दूसरे के मुख द्वारा से कहला भेजी कि मैं कभी रोमन काथोलिक न हूँगी। पिता बहुत जुल्म करने पर था किन्तु साहब और चौकीदार ने उसे हटा दिये। पिता का दिल अफसोच से चूर्या होने लगा क्योंकि फादर लोग उसे कह दिये कि जब तक आप की बेटी प्रोतेसतन्त स्कूल में रहेगी तब तक आप को प. साक्रमेन्ट न मिल सकता है। बेचारा पिता क्या करेगा, उस का दिल इधर दुःख से पीसा जाता है, और उधर उस की बेटी अपनी ढिट्ठाई में स्थिर रहती है। पिता अपनी दूसरी बेटी सुशीला नामक, उसे भी कभी 2 भेजा करता था कहकर कि तू जाके अपनी बड़ी बहिन को बुला ला, पर वह क्या करेगी, आती तो थी कि चलिये बाप कुछ काम के बुला रहे हैं किन्तु वह न सुनती थी! उल्टे उसी को वहां से दूरदुरा कर भगा देती थी। कुछ काल बीते पिता फिर कई एक फादरों को साथ लिये लूथरान साहब के पास गया। फादर लोग बड़े आदर से उस को प्रणाम किये हैं परन्तु वह शुरु में एक दम रोस भरे शब्दों से बड़बड़ाने लगा । तब कुछ पीछे शांति भाव से बोलने लगा। फादर लोग उसे खूब समझाये कि पूर्याप्रसाद की लड़की, यहां आप के स्कूल में है। उस की उम्र छोटी होने के कारण वह बिल्कुल पिता के अधीन में की है। अगर आप लोग उसे अपने यहां रोक रखेगें तो वह अदालत द्वारा अपनी लड़की को ले जा सकता है इत्यदि.....। साहब ने कहा कि अभी रहने दीजिए, जब स्कूल की छुट्टी होगी तब देखी जायगी। बाप फिर मान कर चुप से चला गया है। जब स्कूल की छुट्टी हुई तो लड़की सीधे गांव चली गई। वहां जाकर देखती क्या, कि सब घराने लोग काथोलिक होने पर हैं। उन्हें भी बहुतेरा समझाया पर कुछ न हुआ। वे सब एक शोर से पिता ही का करतूत बतलाये हैं। अन्त में यह सोच कि पिता ही को पहिला ठीक से समझाने होगा तब केवल बनेगा कह कर रॉंची लौट आकर बाप के यहां रहने लगी। घर में रहते वक्त बारम्बार धर्मविषय पर वाद विवाद होता रहा। एतवार2 और पर्व दिनों पर घराने के लोग पवित्र मिस्सा सुनने को आते थे, परन्तु यह ठीढ लड़की सदा ही लूथेरान गिर्जा जाया करती थी। एक एतवार को गिर्जा हो चुकने के बाद अपनी संगियों से दुःख सुख की बातें करते गुजरने में 4,5 शिक्षकों से मुलाकत हुई। वे भी उस से सब हाल पूछने लगे। बात करते 2 एक दो जन कहने लगे कि असल में रोमन काथोलिक धर्म ही सच्चा धर्म है क्योंकि यीसु ख्रीस्त से सिखाई हुई शुरु गिर्जा तो वही है। उसमें एक पोप स्वामी होता है, और उसी के अधीन सारी गिर्जा चलती है। यह बात उन के मुख से निकलते ही तब आपस में रगड़ा झगड़ा होने लगा। इतने में एक कहने लगा कि हे भाई हम लोग तो शिक्षक हैं, नाना प्रकार की किताबें पढ़ते हैं। कुछ ध्यान देकर पढ़ने से पूरा मालूम होता हैं कि रोमन काथोलिक धर्म ही सच्चा है। हां पर लाचार होकर हमें कहना पड़ता है कि जहां जीना वहां मरना, पेट के लिये तो हमलोग हैं जौभी ठीक से जानते हैं कि यह धर्म झूठा है। पूर्याप्रसाद ठीक किया कि उन लोग घराने समेत काथोलिक हुए हैं केवल यह बेचारी लड़की बाकी बची है। कोयल पक्षी की नाई होती है जो इस बगीचे से उस बगीचे, इस पेड़ से उस पेड़ पर उड़ती फिरती इस खोज में कि कहां मुझे सबसे मीठा रसवाला आम फल फुल मिले इत्यदि....। जब लड़की उन्हों की बात सुन चुकी तो मन ही मन बहुत घबराने लगी। घर जाकर पहिले से और अधिक ध्यान देकर काथोलिक धर्म की चाल ढाल देखने लगी। संयोग से एक दिन ऐसा हुआ कि लड़की घर पर रहते ही कई एक फादर लोग बाप के यहां आने लगे। उन के आने की खबर लड़की के कानों में पड़ते ही उसने यह सोच किई कि शायद मुझे जबरदस्त से काथोलिक बनावेगें, कहकर चुपचाप से एकान्त में जा छिपी। जब फादर लोग घर पहुंचे तो सब कोई घराने के लोग हां आसपास के संसार लोग भी उन पास आकर सुन्दर से बातें करने लगे। तब यह मोरा कोने में छिपी हुई लड़की दरवाजे के निकट जा आंखे चुरा चुरा कर देखने और उन्हों की बातों के सुनने लगी। उस के देखने

और सुनने का यह मतलब था, कि लोग कहते हैं कि रोमी पादरी लोग ठीक आदमी नहीं हैं सदा इधर उधर अपना झूठा धर्म प्रचार करते हैं और रुपये दे देकर लोगों को बहकाते हैं इत्यदि..... सो मैं ठीक से अपने आप इस बात की परीक्षा करुंगी।
पिता अपनी बेटी का बहुत ही खोज किया पर उस का पता न लगा। जब फादर लोग निकल के कुछ दूर चले गये, तब कुछ पीछे से लड़की बाहिर हुई। फादर लोग इस लड़की के वास्ते पिता के हाथ में छोटा क्रूस, रोसारी, स्कापुलर और तस्वीर दे दिये थे । लड़की प. क्रूस के सिवाय और कुछ न लिई। इस कुस को अपने पास रखकर वह बारम्बार उन फादरों को याद करके मन ही मन सोचती थी कि उन्हें बहुत ही ना ठीक आदमी कहते हैं परन्तु मैं तो खुद आप ही देखी और उन की बातों को सुन चुकी हूं। वे तो बहुत आदरणीय,कोमल, मधुर वचन के तथा सभों से अत्यन्त मिलनसार सा जान पड़ते हैं। भला मैं धीरे धीरे और और बिषयों पर देख भाल करती जा¬ंगी जब तक कि इस का पूरा पता न पा¬ं।

14 अचानक से एक लड़की के लिये भाग्य दिन मिल गया। पिता रोज 2 फादरों के यहां कचहरी के काम के वास्ते आया जाया करता था। तब कुछ पीछे सेवक लड़का या छोटी बहन उस के लिये भोजन पहुंचा देते थे। एक रोज मां ने कहा कि तुम दोनों बहिन साथ लगकर पिता के लिये खाना ले देना। आज्ञानुसार भोजन साथ लिये दोनों बहिन चल दिई। पिता ने दोनों बहिनों को आती देख शीघ्र ही फादरों को खबर दिया कहकर कि फादर देखिये आज तो मेरी बड़ी बेटी भी आ रही है आप लोग उससे बात कर सकते हैं क्योंकि गर्मी के काररा उन लोग यहां ठहरेंगी और चार या पांच बजे केवल घर लौटेंगी। इस खबर को पाकर, फादर लोग जो यीसु के प्रेम से ज्वलित हो आत्माओं को बटोरने में दिन रात लिप्त हैं तुरन्त ही मुझ एक कठोर अन्धी और लाचार आत्मा की खोज में दौड़ आये हैं। जब आये तब बहुत ही मृदु वारी से बातचीत करने तथा कुस चिन्ह बनवाने लगे। सुशीला नामक लड़की तो अच्छी तरह से कुस चिन्ह बनाई पर जेठी लड़की बनावे कैसी ! शरमीन्दा हो तौभी आज्ञा भंग के डर से एक उगंली उठाकर चुपचाप से हवा में कुस का चिन्ह बनाई। फादर और उपस्थित वाले सब हंस पड़े और कहने लगे कि धीरे 2 वह भी बहिन के समान सीखेगी तब जानेगी। ऐसा ही कुछ दिन होता चला कि स्कूल की छुट्टी के दिन पूरे हो गये। लड़की बिना फीस के फिर लूथेरान स्कूल में ग्रहण किई गई। स्कूल के प्रधानों फीस के लिये उजुर किये तो लड़की ने बतला दिई कि पिता की इच्छा बिना, मैं आप ही चली आई हूं। ऐसी बातों को सुनकर अत्यन्त ही मगन हो उसे मिशन की पाल पुत्री सा रख लिये और सब बिषयों में उस की अधिक चिन्ता किया करते थे। जौभी लड़की को स्कूल में कुछ बात की भी घटी न थी तौभी मन में और दिल में सदा डवांडोल हो बड़ी चिन्तित रहा करती थी। नाना प्रकार की पाठ बिषयों पर इतना ध्यान न देकर अधिक से अधिक धर्म सिखलाई पर विशेष जांचती थी। इन्हीं दिनों में कुछ पीछे ''रोमन मत खण्डन'' नाम की किताब छापी गई। स्कूल में काथोलिक धर्म बिरोधी नाना भांति की शिक्षा दिई जाती थी। लड़कियों का मन भी गड़बड़ होने लगा और प्रश्न पर प्रश्न डालने लगी। निदान शिक्षक लोग कहने लगे कि असल गिर्जा तो वही है जिसे यीसु ख्रीस्त ने ठहराया है मगर धीरे 2 वह बिगड़ गई। लूथर मारटिन जो हम लोगों के धर्म का मूल आदमी हुआ, उसे फिर सुधारने के लिए बहुत 2 कोशिष किया पर कुछ बन न पड़ा इत्यदि....। तब ऐसी बातों को सुनकर और तरह के सोच उत्पन्न होने लगा और आपस में बारम्बार वाद विवाद होता रहता था।

15 1890 ईस्वी के 19 मार्च को कलकते से चार लोरेटीन मादर लोग रांची आकर स्कूल खोलीं। पूर्राप्रसाद यह सोच कर कि अपने दोनों बेटियों को मादरों के यहां रख दूंगा करके आनी छोटी बेटी से बोला कि तू जल्दी जाकर अपनी दीदी को बुला ला। उस से कह देना कि बाप आप को कुछ विशेष बात के लिए जल्दी बुलाते हैं सो मेरे ही साथ में चली आइये। बहन की बात सुन लेकर और घर बुलाई जाने का असल काररा जानने की तेज इच्छुक होकर वह तेज हठ करके बहन से पूछने लगी। अन्त में बहिन ने सब कुछ साफ से कह दिया कि रोमन मिशन की सिस्टर लोग आई हैं उन्हीं के स्कूल में हम दोनों को रखना चाहता है। तब सब हाजिरवाली लड़कियां हंस पड़ी और उसे बड़ी ठठ्बाजी में उड़ा कर वहां से खदेड़ दिई, बोलकर कि तुम यहां अपनी बड़ी बहन को चुरा ले जाने आई है धत, तेरी रोमन भूतनी, हट ! हट ! भाग जा नहीं तो

साहेब, मेम और चौकीदार के द्वारा धर पकड़वा के ऐसी मार मारवाएंगी कि तुम्हारा चुरनीपन निकल ही जाएगी कहकर दुड़दुड़ाने लगीं। घर लौटकर लड़की ने पिता से सब कह सुनाई। अन्त में पिता ने बेटी सुशीला और अपनी भतीजिन बेटी कृपा नामक, दोनों को मादरों के स्कूल में रख दिया।

16 अब घराने के लोग सब कोई कथोलिक धर्म पर पर आये, पर एक ठो मन मतलबी ढीठ लड़की अकेली लूथेरान धर्म में रह गई। हां रह गई तो सही पर कहां उस का मन स्थिरता को पावेगी ! समुद्र के लहरों में जैसे नाव हिलती डोलती है तैसा ही सच्चाई की खोज में इस का मन हिलती डोलती थी।

17 जब स्कूल की छुट्टी फिर आ पहुंचा तो लुथेरान साहब और मेम लड़की से पूछने लगे कि रहोगी या घर जावोगी? तो उतर हुआ कि कुछ दिन के लिये घर जाकर थोड़ा जांच लेगी। तब वे घर जाने की छुट्टी दिई। इन्हीं दिनों में कभी 2 काथोलिक गिर्जा में प. मिस्सा के वास्ते आई। यहां आकर सन्त मरिया और दूसरी 2 मूर्ती, तसवीर, फूल, बत्ती और लोबान इत्यदि देखकर घबड़ा गई, सोच कि संसारों की नाईं देव मूर्तियों को पूजते हैं इत्यदि 2। घर जाकर इन सब बिषयों पर बहुत से पूछताछ करने लगी। घर के सब कोई उसे खूब समझाये बोले कि यह संसारी पूजा नहीं है पर सन्तों का स्मररा के लिये यह मूर्ती, तसवीर रखी जाती है इत्यदि 2। जो आदमी राजा को प्यार से मानता है वह मां को भी अवश्य आदरमान करेगा। फिर यह अकेला नहीं किन्तु उस के सब प्यारे लोगों का भी आदर कड़ाई करेगा इत्यदि। यदि कोई अभी यहां बाप के पास आवे तो क्या उसे अकेला आदर सत्कार से सलाम करेगा कि हम सब कोई भी करेगा। पिता ही की ओर से मां बेटे बेटियों और घराने के लोग आदर मान पाते है। तिसी भांति, कुवारी मरिया यीसु की मां है और सन्त और सब दूत ईश्वर के प्रिय हैं तो क्यों आदर ना मिले। पूजा की तौर पर नहीं, क्योंकि ईश्वर अकेला सब पूजा आदर के लायक है।

18 आखीर बहुत2 सोच बिचार करके समझ गई और जब दूसरी बार फिर पवित्र मिस्सा के लिये आई तो लूर्द की निष्कलंक मरिया की मूर्ती पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डाल के मोहित हो गई। उस का मन एकदम से पलट गया और कहने लगी कि हो न हो यह धर्म सच्चा है क्योंकि यहां कुँवारी का बहुत ही आदर सत्कार दिखाई देता है। हम लोगों के प्रोतेसतन्त धर्म में ऐसा बिल्कुल नहीं है, हां इसके उल्टे सन्त लोग और विशेष करके कुंवारी मरिया को घृणा और तुच्छ करते हैं। अब जो भी हो कुछ परवाह नहीं है मैं अवश्य काथोलिक बनूँगी, कहकर प्रोतेसतन्त गिर्जा जाना बन्द कर दियीं । यह हालत मालूम करके प्रोतेसतन्त पादरियों ने बिन देर किए लड़की की शिक्षक जी को दो बार भेज दिये बोलकर कि ''आप जाकर उसे अच्छी तरह से समझा दीजिए, वह क्यों ऐसे पागल होती है झूठा धर्म ग्रहण करने से क्या उसे कुछ डर नहीं लगता ? शीघ्र अपना मतलब बदल के उसे स्कूल आना उचित है।''लड़की ने उत्तर दिई कि मैं एक बार काथोलिक धर्म जानना चाहती हूँ, अगर वह असल धर्म है तो मैं निश्चय उसे ग्रहण करुँगी और फिर न लौटूँगीं । आप लागों के प्रेमी शिक्षा और मिहनत के लिये मैं सारे दिल से धन्यवाद देती हूँ।

19 2 जून 1890 ईस्वी में लड़की कोनवेंट स्कूल में भर्ती हुई। यहां आकर खूब आनिन्दत दिल से धर्म सीखने लगी। इसके साथ 5 प्रोतेसतन्त स्त्रियां भी शिक्षा पाकर 31 जुलाई को पहिला पवित्र कोम्यूनियोंन पाई हैं। काथोलिक बपतिस्मा में खिस्त आनन्दित रुत का नाम हुआ है मरिया बेर्नादेत य सुशीला का नाम सिसिलिया और मझला पितिया बाप की बेटी कृपा का नाम बेरोनिका य मोक्ता विधवा की बेटी का अपना ही निज नाम रह गया, अर्थात् मेरी। बेरोनिका और मेरी तो आगे ही दृढ़कररा साक्रमेन्त पाई मगर मरिया बेर्नादेत, सिसिलिया और पिताजी को 21 फरवरी 1892 ईस्वी में जब कलकत्ते से महा मान्यवर आर्चविशप पौल गोथोल्स रांची आये थे तब उस के हाथ से दृढ़कररा पाये है। अब सब कोई काथोलिक होकर दिल की बड़ी शान्ति और आराम से रहने लगे।

20 इन लड़कियों का स्कूल में प्रायः दो वर्ष न बीते कि लोग चारों ओर से सादी के लिये दिक् 2 करने लगे। एक दिन का वर्रान है कि लोग सादी का बन्दोवस्त करने के लिये बेरोनिका को देखने आये हैं। वह एकदम से नहीं, नहीं खुश कहने लगी, पर वे एकदम न मानते थे, तो वह दौड़ जाकर एक बड़े ¬चे पेड़ की शिखर पर जा बैठी और कहने लगी कि यहां से जाना है तो चले जाओ, मैं सादी करना मंजूर न करती हूँ तौभी वे देर तक उसके लिये ठहरे थे लेकिन वह कुछ परवाह न किई, खूब मजे से चिड़िया की नाई बैठी रही जब तक कि लोग अपना मुंह लिये घर न लौट गये। कुछ महीने बीते, उस लड़के का सादी हो गया लेकिन वर्ष ही के भीतर में उसका मगज अक्ल बिगड़ जाकर एकदम से पागल हुआ और दिन रात चारों ओर घूमता फिरता बड़बड़ाता हुआ ऐसा मर गया। हम लोग ने ईश्वर को खूब 2 धन्यवाद दिया क्योंकि वह बहिन बेरोनिका को ऐसी शोकमय दशा से मुक्त किया है।

21 ये चार लड़कियाँ जिनका नाम उपर बतलाया गया है वे अपना मतलब को महा मान्यवर प्यारे फादर जोहन डिसमिट एस. जे के पास प्रगट किया। वह अपनी शक्ति भर उन्हें मदद देने तथा उनका उत्सव बढ़ाने कभी न छोड़ा है। कुछ पीछे अति मान्यवरीन प्यारी मेरी तेरेजा जो उन्हीं दिनों में रांची की बड़ी प्रधानी मादर थी, भी फादर डिसमिट के साथ होकर अपनी प्रेमी बात, काम और सलाहों से सदा उस्काती जाती थी। फिर कुछ काल बीते मान्यवर प्यारे फादर सपार्ट, फादर हागहेनबेक ये दोनों ने भी धर्म समाजिक जीवन कैसे सीधे स्वर्गीय पथ है हमें समझाने में अटल रहे। बाकी सब दूसरे फादर, मादर और लोगों का यह सोच था कि निष्फल काम में हाथ डालने के सिवा और कुछ नहीं है। हां बीस तीस वर्ष के बाद शायद ऐसा हो सकता है किन्तु अभी यह समय नहीं आया है इत्यदि 2 कहने लगे।

22 जैसे पहिले कुछ वर्रान हो चुका है कि जो लड़कियाँ सादी करना मंजूर नहीं हैं वे स्कूल से निकाली जाय, सो ऐसा ही किया गया है। जब सलीना नियमानुसार कलकत्ते से प्रोविंशयल रेवरेन्ड मादर मेरी गोनजागा रांची आकर यह सब वृतान्त सुनी तथा लड़कियों के निज मुंह की बात मालूम किई तो उस का दिल भी पिघल गया तब कहने लगी कि प्यारी बेटियो, मैं आप लोगों की इस पवित्र इच्छा की पूर्ति के लिये अथक चेष्टा किया करुँगी, इतनी देर तक अपना हिम्मत न हारना, सदा सुचाल लड़किया रहकर यीसु को सारे दिल से प्रेम करने में नित्य लौलीन रहना इत्यदि''।

23 सो विशेष करके ये तीन जन अर्थात् महामान्यवर प्यारे फादर डिसमिट, मान्यवर प्यारी प्रोविंशयल मदर मेरी गोनजागा और प्यारी मदर मेरी तेरेजा एक साथ होकर खुद आप से लाट बिशप गोथोल्स से तेज अर्जी किई हैं कि आप कृपा करके इन चार लड़कियों को स्कूल में रहने की अनुमति दीजिए और इन्हीं द्वारा जांच लीजिए अगर यीसु का सच बुलाहट है या नहीं। तब महा धर्माध्यक्ष ने इन की अर्जी सुन लेकर मनरेसा के बड़े फादर को लिखकर कहा कि जो 2 लड़कियाँ विवाह न मंजूरी के सब स्कूल से दूर किई गई हैं सो फिर भर्ती किई जाय। जब बड़े फादर से यह आज्ञा सूचित किई गई तो बेचारी लड़कियों का दिल आनन्द से फूला न समाया। मेरी बेरोनिका को गांव से लाने के लिये तीनों जन, मेरी बेर्नादेत्त, सिसिलिया और मेरी एक संग होकर रवाना हुई। भयंकर घोर वर्षा के दिन होने के वजह से भींग कर लहोलठ हो आगे बढ़ना कठिन हो गया । अन्त में एक संसार निकट कुटुम्बीनों के घर में जा बैठी। वे बड़ी खुशी से ग्रहण करके झटपट से आग सुलगाये जिसमें हम लोगों का वस्त्र कुछ सूखने पावे और भी अपने भोजनों से जो कुछ घर में बाकी रहा उस से हम लोगों को अच्छी तरह से खिलाये हैं। उन लोग बहुत अर्जी किये कि आज यहीं ठहर जाइये क्योंकि पानी 2 कैसे जाओगी? शायद नदी भी भर गई है इत्यदि2 । पर हम लोग एक न मान के शीघ्र आगे बढ़ने लगीं नदी के निकट गांव पहुंची तो वहां के लोग भी और जुल्म से रोकने लगे कहकर कि एकदम सांझ हो रहा है सो कैसे जाओगी? हमलोगों के गांव का डोंगा तो कल परसों ही बाढ़ से बह गया है। हां तुम लोगों के गांव का नाव तो उपर में लगा हुआ है पर कदाचित उसे बंद करके चले गये होंगे। उन की सुन लेकर हमलोग तौभी हठ किई बोलकर कि चलिये वहां तक हमें पहुंचा दीजिये। गांव का एक साहसी आदमी ले चला। अब हम लोग एक बड़े नाले के पास पहुंची जो पानी से उमड़ा हुआ निकट ही नदी में गिरता था। वह

आदमी हमों की तेज इच्छा जान बड़ी बड़ी कठिनता सहकर हमें नाले को पार कर दिया पर अब नदी को कैसे पार उतरें? डोंगाइत जो लड़कियों के निज घर का भाई ही था सो उसे किनारे में ले जाकर रस्सी से कस के बांध दिया और चला गया ! हम लोग धुंधला 2 दूर में दृष्टि करके एक आदमी का नजर पाई और खूब शोर से पुकारने लगी, कि कौन हो ! आके हमों को पार उतारो ! पुकार की आवाज सुन के आदमी तेजी से लौट आया और बांधे हुए नाव को खोलकर एकदम खेवने लगा। जब इस पार आया क्या देखता कि बहिन लोग हैं और तब अत्यन्त खुशी से मिहनत उठाके पार किया और अपने साथ 2 घर ले गया। इधर साहसी आदमी को खुशी से हमलोग खूब 2 धन्यवाद देके विदा किया है। गांव में एक हफ्ता रहकर फिर चारों लड़कियां कोनवेंट में लौट आई हैं।

24 मादर लोग अब इन लड़कियों को अधिक देखभाल करने लगीं और इस लिये नाना प्रकार के कामों में लगाए जाने लगे। जैसे–लड़कियों को सिखलाने, गिर्जा काम, वेदी सवांरना, बवर्चीखाना, गोदाम, बिमारों की सेवा टहल और रात का जागररा, मुर्दों को धोना सवांरना इत्यदि 2। एक बार की बात है कि एम समय के बिमारी के जुल्म से दूसरी बेला अर्थात् तीसरे चौथे पहर के लगभग में दो लड़कियां एक के बाद एक मर गईं। डूंरुडा कब्रस्थान दूर होने और भी दिन ढल जाने के कारराा उन्हें उसी दिन नहीं गाढ़ने सके थे। उन की लोथें बिमार कोठरी में चट्टाई पर पड़े हुवे थे जिन्हें दूसरे दिन पवित्र–मिस्सा के बाद केवल गाड़ तोप के लिये ले जायेंगे। एक तीसरी लड़की जो प्रायः बारह तेरह वर्ष की थी वह भी बिमार हो खाट पर पड़ी कराहती 2 थी और निहायत कमजोरी के कारराा नजर चढ़ जाकर आखें बन्द न होती थीं। एक साफ शब्द उच्चार नहीं सकती थी। बिमारी की हालत जान उसे पाप स्वीकार और अन्तमलन भी दिया गया था। अब इस बिमार लड़की की रात सेवा टहल के लिये मादर मेरी देपज्जी और एक लड़की की बारी हूई। यह लड़की बड़ी डरपोक थी। थोड़ी सी अंधेरी रात में घर से कहीं नहीं निकलने वाली, गीदड़ या उल्लू या कुछ शब्द सुनने से भी सिकुड़ जाती थी, विशेष कर मुर्दों से अत्यन्त भय खाती थी। मदर और लड़की दोनों साथ में उस की सेवा के कामों में लग गई। बिमार लड़की की दशा कुछ अच्छी जान पड़ने लगी। बेचारी प्यारी देपज्जी दिन भर के काम की थकावट के कारराा तंग हो गई थी। फिर अपने साथ में की लड़की को जांच के निमित उसे सुअवसर मिल गया है इसलिए वह लड़की से कहने लगी कि ''देख मैं कुछ देर के लिये जाती हूँ यहां मेज पर बती, घड़ी, दवा,पानी सब है सो समय2 पर उसे दिया करना जब तक मैं न लौंट आंउ। डरने की कुछ बात नहीं है लड़की अभी पहले की अपेक्षा आराम देख पड़ती है सो हम लोग शक्ति भर यत्न करेंगी तो शायद बच जायगी, अगर मर भी जाय तो कुछ परवाह नहीं है, क्योंकि उसे साक्रमेन्ट तो मिल चुका है ईश्वर की पवित्र ईच्छा पूरी होवे'' कहकर साढ़े दस बजे चल दिई।

25 शुरु में लड़की इतनी चिन्तित न हुई। वह अपने में सोच करने लगी कि मादर जल्दी से लौटेगी इसलिये वह शर्मिन्दा हो कुछ न कही। लेकिन जब खूब देर हो रहा और ग्यारह, बारह, एक बजे तक नहीं लौटती है तो वह भयभीत हो खूब घबड़ाने और डरने लगी क्योंकि घोर अंधेरी रात, मुर्दा बदन पड़ा, बिमार लड़की दरवाजे के एकदम निकट खाट पर पड़ी है। मुर्दे का गंध पाये दो गीदड़ भी आकर जुल्म से भीतर पैठने चाहते हैं। उन्हें खदेड़ने के लिये हाथ में एक लाठी भी नहीं। बेचारी लड़की डर से थरथर कांपने लगी और हाथ उठाकर उन्हें हंकाने लगी पर वे एक न मानते थे। जोर से चिल्लाने के लिये भी लजाती बोलकर कि पीछे मुझे सब हंसी में उड़ाएंगी इत्यदि 2 सोचकर। अन्त में उससे और न रहा गया सोच के कि मैं इस लड़की को और न तो मुर्दे को बचा सकती हूँ, डर से तो मेरा ही जी जैसा अभी निकलेगा सा मालूम होता है सो निकल कर भागने के सिवा और कुछ उपाय सूझती नहीं। फिर से मन में सोचती कि अगर मैं भाग जा¬ं तो इस जीवित लड़की को भारी नुकसान हो सकता और शायद मर भी जायगी। फिर इन मुर्दे बदनों को गीदड़ अगर घसीट के निकाल लेवे और चीर फाड़ कर देवे तो कैसे शोकमय कारराा और क्या ही नीच बुरी बात होगी। हाय ! हाय ! मैं क्या करुँगी ? डर से मेरी नरेटी बन्द हो जा रही है। ऐसे 2 सोचों में कुछ देर तक डूबी हुई थी। थोड़ी देर के बाद अपने जी को सम्भाल के उठ खड़ी हुई और स्कूल का रक्षक, उन दिनों में सन्त रखवाल दूत ठहराये गये थे इसलिये सन्त रखवाल दूतों से यह तेज प्रार्थना किई कि आप लोग मुझे

मदद दीजिये, क्योंकि यह काम पूरा करने को मुझ में साहस नहीं है। देखिये मैं आप लोगों की रक्षा में इन्हें सौंप देती हूॅ सो कृपा करके इन्हें सब जोखिम और नुकसानी से बचा लीजिए।''

26 बिन्ती अन्त करके मेज पर से बत्ती लेकर दरवाजे में घुसी। तब धीमी चाल चलकर मादर के पास पहुंची तो देखती क्या कि वह थक्का मन्दा हो एक दम गहरी नींद में पड़ी सोती है। इसलिये उसे न जगाई मगर फुर्त्ती से स्कूल तरफ जाकर साथियों को जगाके उनसे खूब अर्जी किई कि आप लोग चलकर मुझे मदद दीजिये क्योकि मैं लाचार हो बिमार कोठरी से भाग आई हूॅ। देखिये तो कैसी घोर अंधेरी रात है, मैं अकेली हूॅ, गीदड़ जोड़ा भर आकर जुल्म कर रहा है सो मैं कुछ नहीं कर सकती हूॅ डर से मेरा दिल धक धकाता हुआ सारी देह कांप रही है। मेरी सुन लेकर बहुतेरी लड़कियां साथ चलने को लालसित हुईं परन्तु दो तीन जनों को केवल साथी करके हाथों में ठेंगा लिये शीघ्र जाकर पहरे में बैठ गीदड़ों को हंकाने लगीं। हम लोग सब खुशी से सन्त रखवाल दूतों को बहुत 2 धन्यवाद दिई हैं क्योंकि उन्हें सब नुकसानी से बचा रखें हैं। जब मादर की नींद टूटी तो वह आई और इन सब बातों को सुन कर बहुत 2 हंसने लगी।

27 अब इधर घराने के लोग अपनी बेटियों के बारे चैन में न बैठे थे। विवाह के वास्ते लोग बहुत ही जुल्म करने लगे बोलकर कि कोई उपाय से उन्हें अबश्य सादी देना ही पड़ेगा। बेर्नादेत, सिसिलिया और बेरोनिका के लिये भाई कुटुम्ब लोग तीन कट्टर प्रोतेसतन्त घराने के धनी और माननीय शिक्षित लड़कों को चुन लिये। तब मनरेसा के बड़े फादर के यहां आकर मीठी चुपड़ी बात बनाके कलकते के महा धर्माध्यक्ष पौल गोथोल्स से, दोगली सादी के वास्ते छुट्ठी मंगवाए हैं। महाधर्माध्यक्ष ने यही छुट्ठी प्रसन्न्ता से नहीं किन्तु जोर जुल्म के काररा से दिई थी। बेचारी लड़कियां इस बात कि बिषय कुछ नाम मात्र तक भी न जानती थीं। तब लोग एक बहाने से यह झूठा दोष इन्हों पर डाले बोलकर के कि ये तीनों लड़कियां खुद अपनी खुशी और राजी से प्रोतेसतन्त चुन लिई हैं। इसलिये केवल यह काम बाकी है कि लड़कियां प्रगट में निज मुंह से स्वीकार करें इस बात के जांच के निमित बड़े फादर ने आप से आकर प्यारी मादरों को सब बतला दिया है और आप गुप्त तौर से बैठ गया, सोच के कि शायद लड़कियां मुझ से भय या लज्जित होकर ठीक उतर न देंगीं। जब मादर लोग फादर के मुंह से ऐसी खराब हाल सुनीं तो एकदम उदास होकर कहने लगी कि हम लोग विश्वास नहीं कर सकती हैं यह जरुर से सच बात न होगी, लड़कियां ऐसे दिल के नहीं हैं तिस पर भी आप के कहे अनुसार एक बार उन्हों से पूछना ही उचित जान पड़ता है। लड़कियां इधर उधर क्लास में थीं उन्हें एक एक कर कुछ काम के बहाने बुलावा करके पूछने लगीं। लड़कियां तनिक भी मालूम न किये कि फादर हम लोगों की बात सुन रहें हैं। वे मादरों के पास जो 2 बात बोली हैं सो सब वह अपने निज कानों से सुन चुका है।

28 शुरु में तीनों लड़कियां ऐसी बातों को सुनकर घबड़ा उठीं। तीनों का जबाब एक सा हुआ। वे कहने लगीं कि यह निपट झूठ बात है, हम तीनों तो किसी लड़के के साथ में बात नहीं किई हैं न मुंह से और न चिट्ठी से। ऐसी नीच, बुरी दोगली सादी की बात हम लोगों से कभी न हुई है और न होगी। जो हम लोगों को सादी करने मांगते हैं वे कौन और कहां के लोग हैं? उन्हें यहां बुला लाइये तो उन दगेबाजों का सुन्दर रुप रंग को थोड़ा देखेगी तथा उन्हीं से पूछ लेंगी कि कब, कहां और कैसे बन्दोवस्त हुआ है। छी ! छी ! जरुर कोई ईर्ष्या से हम लोगों को बदनामी करने के लिये ऐसी झूठी दोष लगा रहे होंगे कहकर बहुत कुहक 2 कर रोने लगीं। पीछे सभों को स्पष्टता से मालूम हुआ है कि यह केवल झूठी बनावटी बात थी। इस लिये बड़े फादर ने महाधर्माघ्यक्ष के पास लिखकर सब कुछ कह दिया है।

29 ठहराए दिन में पूर्णप्रसाद के घर में तीनों लड़कियां के विवाह की रीत रस्म ठीक करने के लिये बड़ा भोज तैयार किया गया तथा सभा सी भीड़ लग गई। खान पान, बाजे गाजे, गीत रंग होने लगा। जब तीनों के ससुराल के लोग सास, ससुर वह और सब रिश्तेदार प्रायः इकट्ठे होने को तैयार हुए, तो पिता जी लड़कियों को घर ले जाने को आया। लड़कियां उसी समय सब कोई फादर के धर्मोपदेश सुन रही थीं। फादर को देख

कर झुक कर प्रणाम करके कहने लगा। ''फादर हमारी लड़कियों को हम घर ले जाने के लिये आए हैं। बेर्नादेत्त, सिसिलिया ओर बेरोनिका सीधे घर चलो।''

30 लड़कियां पिता की कड़ी आवाज सुन भय और उदास हो सिर नीचे की ओर झुकाईं। यह देख पिता फिर से कहने लगा कि क्या नहीं सुनती हो क्यों न उठकर आती हो ! तब बेर्नादेत नामक उठ खड़ी हो कहने लगी कि थोड़ा अभी ठहर जाइये, जैसे उपदेश अन्त होगा तब मादर से छुट्टी लेकर जायेंगी। पिता कहने लगे, नहीं, नहीं मादर की छुट्टी का दरकार नहीं है शीघ्र अभी ही चलना है। फादर और सब लड़कियां यह तमाशे को देख रहे थे कि फादर एक लड़की को चिन्ह करके मादर को बुलाने भेज दिया। जैसे खबर पाई मादर फुर्ती से आ पहुंची और कहने लगी कि पूर्राप्रसाद क्या बात है? बाप ने उतर दिया कि मादर ! हमारी बेटियों से कुछ बात करना नहीं, जल्दी चलना है आओ लड़कियो जल्छी आओ ! फादर यह देख आप से उठ खड़े होकर हाथ से निशान करके पिता को चुप कराया और तीनों लड़कियों को अपने निकट बुलाके दबी आवाज से कहने लगा कि देखिये प्यारी लड़कियो, बड़े फादर ने तुम लोगों के विषय में हम सब फादरों को बतलाया और उस ने हुक्म दिया कि प. मिस्सा और बिन्ती, अपनी बिन्ती जो रेाज 2 पादरियों को करने का भारी हुक्म है उसे करें और कुछ स्वदण्ड लेवे ऐसे कि आप लोग इसी परीक्षा से जीत विजय पावें। धर्म में स्थिर रहिये, अजनबी और विशेषकर प्रोतेस्तन्तों से विवाह करने में खूब सावधान रहिये। कभी निराशा नहीं पर बहादुरी दिल के होकर निर्भयता से घर चली जाइये। ईश्वर आप लोगों की रक्षा अवश्य करेगा। यह कहकर अपनी बिन्ती किताब से तसबीर निकाल के तीनों लड़कियों को एक 2 कर दिया। लड़कियां आंसू बहाती हुई फादर को उसके उत्मोतम सलाह और तसबीरों के लिये बहुत2 धन्यवाद दे, घुटनों के बल गिरकर उससे असीस ग्रहण किई और पिता के साथ चल पड़ीं। कोनवेंट के फाटक से बाहर जाकर पिता ने अपनी बेटियों को यह सखत हुक्म दे कि सीधे घर पहुँचना है कहकर आप कुछ काम के लिये चल पड़ा। थोड़ी दूर पर लड़कियों से जेम्स नामक एक काथोलिक प्रचारक की मुलाकत हुई। वह उन्हों से कहने लगा कि ''बेचारी लड़कियों क्या आप लोग अभी घर जा रही हो?'' उन्हों ने जबाब में कहा कि हां । वह कहने लगा कि खबरदार ! कभी मत ठगा जाइये पर साहसी दिल से लड़कर जीत लीजिये क्योंकि अभी आप लोगों पर भारी परीक्षा आ पड़ा है न सिर्फ विवाह का लेकिन धर्म से भी डिगाने के लिये जान बूझ कर लोगों ने ऐसा किया है। महा धर्माध्यक्ष से दोगली सादी की इख्तियार मांग चुके हैं पर आप लोग उस की कुछ परवाह न करना। वे तुम्हें किनता भी मार,मार लाठी, ठेंगा से डराने या जो कुछ करे आप लोग मत डगमगाना पर काथोलिक धर्म में डटे रहना।'' वह ऐसी सुन्दर 2 सलाहों से हम लोगों को ढाढ़स देकर बिदा किया।

31 अब तीनों बहिन चलती 2 एक दूसरे का मुँह देख्ती हैं। तीनों तो चिन्ताओं में डुबी हुई तथा एक प्रकार के भय से दिल जैसा धुकुड़ पुकुड़ कर रहा था। बीच 2 में कभी प्रार्थना करती, कभी निराशा हटाने के लिये मनमोहनी बातें करके दिल का उत्साह बढ़ाती हुई घर पहुँची। तीनों अपने में दृढ़ मनसूबा बांधी कि ईश्वर की दया से इस परीक्षा में विजय प्राप्त करने की शाक्ति भर कोशिश किया करेंगी।

32 घर में पहुंचते ही हमें अच्छा भोजन दिया गया, परन्तु खावें कैसे ? उदासी भरे हुए को आहार रुचे कैसे ? कंठ तो फुल्ला सा जान पड़ता, और किसी से बोलने का दिल ही नहीं, तिसपर भी जबरदस्ती से कुछ खिलायें हैं। कुछ देर के बाद धीरे2 नाना प्रकार की मीठी, चिकनी, फुसलाहट की बातें निकालने लगे। कुछ हम लोग सुनी अनसुनी सी चुप रहीं, मगर धीरे2 वे और जोर करने लगे। निदान हमें बोलना ही पड़ा कि नहीं नहीं, कभी नहीं, हम लोग सादी करना नहीं चाहती हैं, सो तो आप लोगों को पूरा मालूम था ही,और तिस पर भी आप लोग बिन कहे पूछे क्यों ऐसे नीच दोगली सादी का बन्दोवस्त करके उठान पुठान कर रहें हैं। वे कहने लगे कि तमाम दुन्या ऐसी करती हैं इसलिये तुम्हीं को कुछ पाप न लगेगा। महा धर्माध्यक्ष और सब फादर लोग भी इस बात पर खूब राजी हो चुके हैं। मत डरिये सब ठीक ठाक हो गया है। बड़े 2 नामजद घराने के सुशिक्षित सुन्दर 2 जवान हैं। तुम्हें क्या ही भाग्यवान सुखित जीवन प्राप्त होता है। तुम्हें कुछ का दिक् तकलीफ नहीं होगा। इसलिये निर्बुद्धियों की नाईं नहीं, पर अक्ल से बातें करनी चाहिये। वे प्रोतेसतन्त हैं

तो तुम्हें क्या परवाह, वे अपने धर्म में और तुम लोग अपने धर्म में रहना। वे घराने समेत यह प्रतिज्ञा करते हैं कि धर्म बिषयों पर हम लोग उन्हों को कुछ भी रोक टोक न करेगें। सो अब तुम्हें क्या कहना है ? हम लोग एक स्वर से विवाह करना इनकार किई हैं। वे तब खूब रंज होकर भांति 2 के बकने और धमकी देने लगे बोलकर कि तुम लोग ऐसी ढीठ मूर्ख होती हैं, खुश खुश उतर देने में देर न लगाओ। बाप अभी घर में नहीं है परन्तु वह जल्द लौटेगा तो। अगर वह लौट का मालूम करेगा कि बेटियां निहायत ढीठ पागल हैं तो गुस्से में होकर अवश्य खूब मार पीट करेगा इसे जरा ख्याल करो और भी तुम्हें कैसे लाज की बात होगी। इतनी 2 बातों को सुनने पर भी हम लोग ज्यों का त्यों स्थिर रहीं। जब पिता लौट कर लड़कियों का हाल मालूम किया तो वह क्रोधित हो बोल उठा कि तीनों लड़कियां अलग 2 किई जाय। बेरोनिका और सिसिलिया को दूसरों के घर में एक साथ कमरे में रखकर दरवाजे पर ताला दिई जाय ऐसा कि बेर्नादेत्त उन के पास तक जाने न पावें, क्योंकि उन्हें बहकाके बिगाड़ती और दृढ़ता देती रहती है। पिता की आज्ञानुसार लड़कियां फर्क किई गई ऐसा कि वे अब एक दूसरे का हाल न जान सके।

32 इधर भीतरी आंगन में लोगों की बड़ी भीड़ सभा सी लगी थी। बेर्नादेत्त उनके सन्मुख किई गई। उसे न्योतेहारे देखकर सब खुशी से फुल उठे और नियमानुसार हाथ मिलाने और चूमने लगे। बेचारी लड़की आंखें भी न उठा सिर पर साड़ी से घूंघट ले खड़ी होकर बिलक् 2 रोती थी क्योंकि वह किसी को देखना न चाहती थी।

33 हाथ मिलाने में एक जवान आ पहुंचा। भीड़ में की एक स्त्री ने कही कि ''बेटी मत रो, देख वही तेरा वर होनेवाला है, इसलिये आंखें उठाकर उसपर दृष्टि लगा और बड़े आदर सत्कार से उस के संग हाथ मिला ले।'' यह सुन बेर्नादेत्त ने फुर्ती से हाथ खींच ले बल दे मुट्ठी बन्द किये हाथ सिकुड़ाकर कपड़े के अन्दर छिपा लिई। लोगों ने बहुतेरा जोर जुल्म किये, कहके ''बेटी ऐसी मत हो, देखिये दुन्या की चाल तो यही है कि अमीर या भिक्षुक की लड़कियां, जो जैसा कितना हूं प्यार के योग्य होवें पर तौभी वे पराये घर जाती हैं और पराये की लड़की घर की रानी बन बैठती हैं। तुम ऐसे बड़े प्रतिष्टित आदमी की बेटी होकर केवल अपनी मूर्खता में रहती है। छी ! छी ! तुझे भी लाज नहीं ? सब कोई तुझे देख रहे हैं। इतने दल के साम्हने ऐसी ढिठ्ाई करने से तुम अपने और घराने में केवल निन्दा ओर शर्म लाती है। देख बेरोनिका और सिसिलिया कैसी खुशी से सब बातों को मान लिई हैं। सिर्फ तुम अकेली जिद्दी, मन मतलबी हैं। उन के नमूनों पर भी तुम भी चलो तो सब ठीक होगा। कैसे सुन्दर से तीनों बहिन एक ही मण्ड़वा में सादी होने से क्या ही आनन्द की बात होगी।'' बेर्नादेत्त ने उत्तर दिई कि बेस, वे सादी होने चाहती हैं तो होवे परन्तु मैं इनकार करती हूँ। लड़की ने ठीक पूरी रीति से मालूम किया कि यह सच बात न थी परन्तु बनावटी बातों से उसे बझाने चाहते थे। वे बहुत गुस्सा होकर कहने लगे कि देख पिता कहता है कि किसी की राय पर नहीं चलती है तो उसे छोड़ दीजिये। जावे, कहां जाने चाहती और जाने क्या होने मांगती है, मैं उसे एक फूटी कौड़ी तक न दूंगा। मजे से खाती पीती और पहिनती ओढ़ती है इस कारण उसे कुछ का परवाह नहीं। बात की बात में नातेदार में का एक बड़ा भाई तो कुछ निकट ही खड़ा था सो कहने लगा, ''कि इसे छोड़ दीजिये तो, मैं ही उसे ठीक कर देता हूँ बोल के बेर्नादेत को पकड़ के धक्का धुक्की करके झिकझोरते हिचकाते भीड़ के पास से दो चार कदम अलग करके थप्पड़ पर थप्पड़ देने और कानों को मलने लगा। अगर प्रेम से न बनता तो तेरे लिये मार ही सही है। बोल, जल्दी बोल सादी करेगी कि नहीं ? लड़की ने दृढ़पूर्वक उत्तर दिई, नहीं कभी नहीं। तो देखिये फिर से मार, गाली पर गाली। बाप से तुम किस प्रकार की है ? आदमी तो समझता, जानवर होता तो मार पीट के डर से चलता था। क्या तुम शैतान का बच्चा है ? इसलिये तो आदमियों के संगति में उठना बैठना तुझे पसन्द नहीं आता है।'' भीड़ यह देखकर बोल उठी कि ऐसे न करना चाहिये, क्योंकि जवान लड़की पन्द्रह सोलह वर्ष की है। उन को अभी अफसोच या डर से जवानी दिल घबड़ा जाता है। पीछे वह धीरे 2 से मान जायगी।

34 बाप लड़की का हाल देख के बहुत 2 दुखित, नाराज और झुंझला के महिमानों से अलग हो कमरे में बैठ कर वहां बहुत रोने, आह मारने लगा बोलकर, कि ओह! व्यर्थता से हम इतने दुःख विपत्ति झेलकर उसे

पालन पोषण करके बढ़ाया और उत्तम होता कि नन्ही बच्ची होकर अपनी माता के संग ही मर मर जाती, तो मुझे इतना दुःख न होता था। पिता के ऐसे शोकमय कूल्हने को सुन, सभों का जी भर आया ओर उन्हों की आंखों से आंसू की धारा बहने लगी। कुछ देर के बाद में पिता अपने को स्थिर करके कमरे के अन्दर ही से गर्ज कर कहने लगा कि लड़की को ठीक समझाइये, नहीं तो मैं अपने को और रोकने नहीं सकता हूँ । जो हो, सो हो, मैं अपने निज हाथों से उसे गोली देकर पूरा करुंगा और निज प्राण भी खो दूंगा। उस की ऐसी भयानक बातों को सुनकर कई एक जाकर कमरे से एक बन्दूक और दो पिस्तोल को निकाल लाकर छिपा दिये । भाई बन्धु पिता का करतूत को देख कर लड़की को और जोर से धमकी देकर जुल्म से समझाने लगे कि बेटी मान जा। केवल एक बार तो, हां सादी करना मंजूर हूँ बोल दे तो बात बस, बन जायगा। इसलिये वर होनेवाले लड़के को फिर निकट बुलाये और उसे हुक्म दिये कि हे बेटे लड़की का हाथ पकड़ ले। तब लड़का निकट आकर कहने लगा कि देखिये आप क्यों ऐसी होती हैं ? मैं दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूं कि तुझे धर्म विषय में कुछ भी रोक टोक न करुंगा। एक बार, हां केवल एक ही बार दृष्टि लगाके मुझे देख लीजिए कि मैं लंगड़ा, लूला, काना, गूंगा और बहरा हूँ या नहीं ? बस, जरा से हाथ मिलाइये मैं उसी से पूरा सन्तुष्ट हूँगा, इसके सिचा और कुछ न चाहता हूं। यह कहकर लड़की के हाथ पकड़ने का यत्न करने लगा। तब लड़की भी शक्ति भर झिड़का झिड़की कर हाथ छिपाई तथा कह उठी कि मैं कभी न हाथ मिला¬गी। मैं आप की कभी न हूंगी सो जानिये, इसलिये मुझे ऐसे दिक् मत कर। तो वह बोल उठा कि राही बटोही तो गुजरते ही जान पहचानों से एक दूसरे को सलाम करके हाथ मिलाते हैं। लड़की ने उत्तर दिई कि वह साधारण तौर का सलाम है, परन्तु अभी तो आप लोग मुझ से कराते हैं यह फर्क निशानी का सलाम है। आप लोग यह मत सोच कीजिये कि मेरा दिल किसी दूसरे लड़के पर लगा हो। अगर आप लोग ऐसे सोचते होंगे तो यह बड़ी भूल है सो जानिये। मैं स्पष्टता से स्वीकार करती हूँ कि सादी करना मुझे ना मंजूर है।

35 बाप लड़की बातों को कमरे के अन्दर से सुनता ही था अचानक गर्जते हुए अपने हाथ में एक चोखी तलवार चमकती हुई नंगी तलवार लिये बेटी की ओर दौड़ने लगा। भीड़ हा ! हा ! कर चिल्ला उठी। बेरनादेत को जो माँ भाई लोग धरे थे सो कहने लगे कि बेटी यहां से जल्दी भाग निकल जा, नहीं तो तेरा नाश होगा। तब वे ही लोग दरवाजे को फुर्ती से खोल के इसे भागने का अवसर दिये हैं। पिता को लोग जुल्म से रोक रखे ऐसी कि लड़की कुछ दूर तक निकल पड़ी। तौभी उस ने दो मनुष्यों को उस का पीछा करने का हुक्म दिया। वे दो मनुष्य पिता की बात उपरले मन से पूरा करने के लिये, लम्बी डांग हाथ में लिये, बहुत कुछ दूर तक उसे खदेड़े। पीछे लौट जाकर पिता से बोले कि लड़की बहुत दूर निकल पड़ी है, सो हम लोग उसे पकड़ के लौटाने नहीं सके हैं। पिता ऐसी खबर सुनके कह उठा कि आज वह भाग कर गई , सो आज की तारिख से फिर हमारे घर में उस का पैर तक धरने न पावेगी। हम तुरन्त ही मादर, सिस्टर और फादरों को चिट्ठी दूंगा, बोल के कि वे उस शैतानीय लड़की को स्कूल में कभी जगह न देवे इत्यदि।''

36 लड़की भागती2 चली आई और चार बजे के पीछे कोनवेन्ट पहुंच के गिर्जा में प. साक्रमेन्ट के साम्हने घुटनों के बल गिरकर आंसु बहाती हुई यीसु को बहुत2 धन्यवाद दिई क्योंकि उस की बड़ी दया और फादरों, मादरों,लड़कियों और सब भले आदमियों की तेज बिजय हमें मिला है। मादर और सब लड़कियां जब बेर्नादेत्त को अकेली देखे तो बहुत घबराने लगे। वे बेरोनिका और सेसिलिया का हाल उस से पूछने लगे, तो बेचारी बताएगी कैसे ? क्योंकि वह आप तो नहीं जानती थी कि उन को क्या आ पड़ा था। बेर्नादेत्त ने तो सोच लिई कि वे जरुर मुझ से पहिले ही भाग कर अगुवा गई होंगी, लेकिन अब वह देखती कि वे नहीं आई हैं इस लिये उन के विषय बड़ी चिन्तित हो रही। आखिर को जब एक दम से सांझ हो गया तब बेरोनिका और सेसिलिया आ पहुंची हैं। उन्हों को कुछ भी मालूम न हुआ कि बेरनादेत्त किस घड़ी घर से भाग चली आई थी। अब जब एक साथ आपस में भेंट हुई तो उन्हों के आनन्द की सीमा न रही। वे आपस में का हाल एक दूसरी को बतलाने लगीं कि लोग कैसे झूठमूठ से कहते थे कि देखो बेर्नादेत्त कैसी सीधी लड़की है, माता पिता की सब बातों पर वह राजी होकर सादी करना स्वीकार किई हैं सो अब सब ठीक होगा। भला, तुम दोनों भी उस के समान होकर सिर्फ एक बात बोलो ''हां'' बस सब ठीक होगा। वे जबाब दिई कि बेर्नादेत्त सादी करेगी या नहीं हमें क्या है। परन्तु हम लोग नहीं करेंगी। इसपर नातेदार का बड़ा भाई सिसिलिया को एक दो थप्पड़ मारा, यों

कहते हुए कि तू इतनी छोटी लड़की होकर ऐसी ढिठाई करना जानती है बेरोनिका तो बड़ी लड़की है इसलिये उसे मारना नहीं बनता है कह कर उसे छोड़ दिया। अन्त में मां उन्हें कुछ काम के लिये बाहर बुलाई तो वे दोनों भी भाग चली आई जैसे पहले बतलाया गया है।

37 दूसरे भोर को घरानों की ओर से बेर्नादेत्त के नाम पर, नाना प्रकार की घुड़की तथा नालिश की एक लम्बी चिट्ठी मादरों के हाथ लगी परन्तु मादरों ने उस लेख की कुछ भी परवाह न किई हैं और न लड़की से भी उसके विषय में कुछ कही क्योंकि ऐसी दिल जली कटी बातों के सुनाने से ठीक नहीं। माँ बाप से जो कपड़ा लत्ता उस के पास था सो भी वे मांगने लगे। इस कारण लड़की ने पुराने चिथड़े गेदड़े को छोड़, बाकी सब दूसरे सन्दूक ;बाक्सद्ध में ठीक से सजा के साथ ही भीतर में एक छोटी चिट्ठी रखकर भेज दिया। चिट्ठी में ये बातें लिखी थीं ''मेरे अति प्यारे माता पिता, आप दोनों को और घर के सब छोटे बड़ों को मेरा बहुत 2 यीसु की बड़ाई ओर प्रेम का चुम्मा होवे मान्यवर प्यारे माता पिता, मैं आप लोगों के आपार प्रेम, मिहनत, दिक् तथा दुःखों के लिये सारे दिलओ जान से बहुत 2 धन्यवाद देती हॅं। फिर आज दिन तक जो जो मेरी बात , काम या चाल से आप लोगों को रंज तथा निरादर हुआ है, उन के लिये मुझे क्षमा कीजिये। मैं आप लोगों के उपरले दिखावे की अति प्रेमी निर्दयता के कारण दिल से धन्यवाद देती हूँ। आप लोगों ने तो सिर्फ हमारी भलाई के हेतु ऐसे कियें हैं। इस में आप लोगों का दोष तनिक भी नहीं हुआ है। आप लोगों को ऐसा करना उचित ही जान पड़ा, सो आप लोग अपना कर्तव्य करने से मेरी भलाई निकल आई है। इस को छोड़ दुन्या के साम्हने आप लोगों के नाम की निन्दा भी साफ हो गई। अब लोगों ने स्पष्टता से आप लोगों के करतूत को पहचान लिया है। आप लोगों की करनी पर कुछ उदास नहीं हूॅं। मेरे दिल में जीवन भर सदा आप लोगों के प्रेम की याद बनी रहेगी और हमेशा आप लोगों के तरफ कृतज्ञ दिल रखूंगी। आप लोगों की आज्ञाधीन बेटी ख्रिस्त आनन्दित रुत मेरी बेर्नादेत्त।

38 जब कपड़ा लत्ता और चिट्ठी उन्हें मिली तो वे बहुत ही अचम्भे में पड़ गये तो सही, किन्तु तिस पर भी वे अपने ह्रदय को कड़ा करके चुपचाप रह गये हैं। लड़की अब सच्चाई से निहायत लाचार दशा में गिर पड़ी क्योंकि उस के पास अब चिथड़े गेदड़े के सिवा और कुछ न था। ऐसी हीन दशा देखकर प्यारी मादरों, मेरी साथी और स्कूल की लड़कियों से रहा न गया। वे अपने निज खर्च से कपड़ा लत्ता और सब आवश्यक वस्तुएँ देने लगीं। पीछे फिर महा मान्यवर प्यारे रेभ. फादर जोन्ह डिसमिट ने महा मान्यवरीन प्यारी मादर मेरी तेरेसा के साथ सलाह करे यह बन्दोवस्त किया कि जरुरी चींजे उसे और उसकी तीनों संगियों को भी मिल जाया करें और ऐसा ही हुआ।

39 अब तो, जो थोड़ा दुःख तकलीफ झेलनी पड़ी सो तो अन्त हुई हैं। ईश्वर को हम सब कोई इस जीत विजय की कृपा के लिये अत्यन्त हर्ष मना के सारे दिल से धन्यवाद दिई हैं। फिर भी सब भले लोगों की प्रार्थना परन्तु विशेष करके उन सब प्यारे फादरों को, जो इस की पूर्ती अपने तेज प्रार्थना, स्वदण्ड और भी पवित्र मिस्सा के बलिदान चढ़ाकर हम लोगों के लिये यह अनमोल कृपा दान कमाये हैं उन्हें यथा शक्ति दिलोजान से करोड़ों करोड़ धन्यवाद देती हैं और प्रगट से स्वीकार करती कि अगर प. मिस्सा, प्रार्थना और स्वदण्ड की सहायता हमें न मिली होती तो निःसन्देह इस परीक्षा में हार जाती थीं।

40 जब लाठ विषप पोल गोथौल्स कलकते से फिर आये तो वह इन लड़कियों की देख भाल करे मादर मेरी तेरेसा के द्वारा से बोले कि अगर तुम लोगों की तेज इच्छा है कोनवेन्ट जीवन से जीने को तो इस के लिये कम से कम और आठ वर्ष तक ठहरना पड़ेगा। इतने में यदि तुम लोग स्थिर रहकर अपने को खूब सीधी लड़कियां, तथा इस महात्मिक पवित्र दशा के विश्वासी योग्य ठहरे तब मैं इस के विषय में और सोच विचार करुँगा। तुम लोग मादरों के पास स्कूल में रहकर उन्हें सब कामों में मदद दिया करना। तुम लोगों के धार्मीक जीवन जीने की अभिलाषी देख कर मेरे मन में यह बिचार आता है कि सब से पहिले मैं यहां लड़कियों के लिये सोदालिती याने निष्कलंक कुवांरी मरिया की संगत ठहरा¬गा जैसे सन्त जोन्ह स्कूल में लड़कों का है।

अगर तुम चारों जन इस संगत में भर्ती होने के खूब योग्य होकर अति शुद्ध मां निष्कलंक कुंवारी मरिया की सच्ची बेटियां बन जाओगी तब और केवल तब पीछे से तुम लोगों के धार्मीक जीवन के विषय में देखूंगा ऐसे कह कर हमलोगों को असीस देकर विदा कियें हैं।

41 महा विषप की बातों को सुनकर हम लोगों का दिल अत्यन्त आनन्द से उछलने लगा। उसी दिन से हम लोग दिनों की, हफते, महीने और बरस की गिन्ती करती जाती थी, यह कह 2 के कि आठ बरस से इतने दिन कट गये हैं और हमारे दिल का साहस उठाती रहीं। हम लोग मादरों के संग बड़ी खुशी से रहने लगीं। वे हमें नाना प्रकार के कामों में और लगाये। जैसे रात दिन लड़कियों की देस भाल करना। गिर्जा झाड़ पोंछ करना, बेदी सिंगारना, प. मिस्सा का कपड़ा तैयार करना। गिर्जा कपड़ा धोकर स्त्री करना, सिलाई करना बिमारों और छोटे 2 अनाथ बालकों की सेवा टहल करके रात दिन जागरण करना। स्कूल में कुछ शिक्षा देना। धर्म की बातें लड़कियों और स्त्रियों को सिखलाना, उपदेश देना। गोदाम, बवर्ची खाना, बागान में सार सब्जी, फल फूलों को देखना ओर कभी 2 बाजार इत्यदि का काम करना। इन सब प्रकार के कामों को ठीक 2 कर लाने में हमें सदा सहज नहीं होता रहा। कभी 2 बहुधा इस, उस से दिक्, दुःख , दिल की घबड़ाहट ओर उदासी झेलनी पड़ी। लेकिन ईश्वर की कृपा के द्वारा, तथा हमारे प्यारे पापसुनक पुरोहितगण जैसे–Rev. Father Chrysanth Sapart S.J., Rev. Father sudovicus Haghenbeck S.J. पर विशेष ध्यान करके Rev. Father joannes De Smet S.J. की अगुवाई और मदद से हम लोगों को बल और दिलासा मिलने से स्थिर रह सकी हैं। ऐसा होते 2 समय, बरस बीतता चला।

42 अन्त में ईश्वर ही के चलाने से ऐसा हुआ है। याने 1895 और 1896 ई. के बीच में बहुत ही भयानक महामारी याने हैजा और आकाल देश में फैल जाकर रोज 2 बहुत 2 आदमी लोग हैजे और भूख से मर मर जाने लगे। सरकार की मिहरबानी से, रोज 2 सांझ को गरीब दुःखी भूखों को कुछ2 खाना ;भातद्ध दिया जाता था। सैकड़ों क्या बूढ़े, जवान, बच्चे, स्त्री और पुरुष थोड़ा भात पाने के लिये आया करते थे। मगर तौभी बहुत ही कमजोर दुःख पीड़ित लोग जिन को उठने बैठने और चलने फिरने की शक्ति कुछ न थी वे कैसे खाना लेने को आवे !! बेचारे चारों तरफ क्या शहर में , बस्ती, खेत, मैदान और रास्ता सड़क की नालीयों में इधर उधर गिरे पड़े मर जाने लगे। उन्हीं दिनों में फादर लोग भी बहुत ही कम थे। तौभी जहां तक हो सका सब फादर लोग उन्हें आत्मा की और बदन की परवस्ती के निमित खूब दौड़ धूप किये हैं। अन्त में यह हुक्म भी हुआ कि सब मादर लोग भी इस पवित्र ओर महान कामों में फादरों का मददगार होवें। होते 2 हम लोगों के स्कूल में भी यह भयानक बिमारी चढ़ाई कर दिई और कई लड़कियां मर भी गई। तब तुरंत स्कूल बन्द किया गया ओर सब लड़कियां को अपने 2 गांव, घर भेजी गई हैं। प्यारी मादरों को इस भयानक कामों में कुछ 2 मदद देने के लिये, हम चार ही लड़कियां अपने निज राजी और खुशी से उन के साथ रह गई। प्यारी मादरों के साथ हम लोग रोज रोज दवा, चावल, कपड़ा और चट्टाई कुलियों के द्वारा से लेकर इधर उधर , घर2 टोली2 बस्ती और गावों तरफ घूमा फिरा करती थीं। तब जो जिन को दवा, चावल दाल, कपड़ा चट्टाई का दर्कार होगा सो देती जाती और दिलासा देकर उन्हें धर्म की मूल बातें समझाती थीं और मरण संकट में पड़े हुओं को तुरंत ही बपतिस्मा देती जाती थीं। दिन रात लोगों के दुःख से रोने बिलापने की आवाज सुन पड़ती थी। प्यारी मादरों को और हम लोगों को अपनी बिन्ती तथा आहार करने की एक फुर्सत तक न होती थी। इधर उधर चारों ओर से लोग प्यारे फादरों के पास और यहां भी दौड़े आते थे। कोई चलिये मादर हमारे घर में दो तीन मर रहे हैं दवा दीजिये, कोई चावल दाल, कोई चट्टाई कोई क्या मांगते थे। बोलकर कि हाय ! हमारा पिता, माता, स्त्री, बेटा या बेटी, भाई बहिन मर गये हैं उन के गाड़ने के लिये कुछ भी नहीं है इत्यदि कहा करते थे। किस की सुने किस की नहीं। उन्हीं दिनों में यहां राँची की बड़ी प्रधानी डवजीमत डंतल ज्मतमें ठवददमत दंउं जीपण वह गरीब दीन दुःखियों का बड़ा प्रेमी और दान दाता थीं। इस अवसर पर परोपकार के कामों में सैकड़ों रुपये ओर असबाब उन से खर्च कर डाली हैं फिर आनाथ नन्हें गोद के बच्चे और लड़के लड़कियों को यहाँ लाकर उन का पालन पोषण कराई हैं। जो जितने अनाथ लोग जीते रह गये उन की असली माँ की नाई होकर शिक्षा दीक्षा की भी चेष्टा किई हैं। हम चार लड़कियों के बीच में का सेसिलिया नामक जो मेरी बेर्नादेत्त की बहिन थी

उसे घर जाना उचित हुआ। इसलिये कि घर में भी बिमारी के कारण से मदद की जरुरत थी इसी कारण दो बहिनों के बीच एक को जाना पड़ा है। पिता जी आकर मादर से सब बातें कह कर ले गये हैं। जब भाई जो बुखार से मररा के ऐसा पीड़ित था सो पूरा आराम हो गया है तब सेसिलिया फिर कोनवेन्ट लौट आई हैं।

43 हम लोग तब अक्टूबर 1896 ईस्वी में अपने माता पिता से विदा लेकर कोनवेन्ट में रह गई और बात कामों में जो जैसे काम बात होवे रात दिन उन के आधीन रहने को ठान लिईं। दो हफ्ते तक तीनों बहन कृपा मरिया बेरोनिका, ख्रिस्त आनन्दित रुत मरिया बेर्नादेत्त और सुशीला सेसिलिया दो हफ्ते तक गांव में रही, घरानों, भाई कुटुम्बों से, गांव वालों भेंट मुलाकत किई और उन्हों को बतलाई कि यह अन्तिमवार है तो वे सब रोने कलपने लगे है। ''मौका भी मिल गया'' इसी बीच में एक और बड़ी झंझट उठ खड़ी हुई याने जोनस तीग्गा बढ़म्बई का लड़का, मरिया बेर्नादेत्त को सादी के वास्ते जुल्म करने लगा। तब वह उस से बोली कि प्यारे भाई जोनस आप को मालूम होवे कि मैं यीसु की सेवा में जाने चाहती हूँ। इसलिये आप, अपनी बात काम और चाल से मेरे रास्ते पर कुछ भी कंकड़ी, ईट, पत्थल के टुकड़े मत बिछाइयेगा ऐसा कि मैं अपनी मनुष्य कमजोरी के कारण ठेस ठोकर ,,खाकर न गिर पडूँ। फिर भी मेरी यह कहना है कि किसी प्रकार की हवा या बायार के झोंके से एक पत्ती या छोटी कागज के टुकड़े तक मेरे पास मत उड़ाइिएगा। यही तो हमारी अन्तिम बिदाती का प्रेमी नमस्कार है सो जानियेगा। इस पर वह बोल उठा कि आप ही मुझको बतला दीजिए कि मैं किस को चुन ले¬? मैं बोली आप की इस में जो आप की इच्छा है सो ही तो बनेगा। वह बोला पर तौभी जिस लड़की को आप बोलेगी उसी को मैं खुशी से मंजूर करुँगा। इस पर मैं बोली कि हमारे प्यारी माता पिता के अनुमति बिना मैं कभी किसी यहां नहीं आती जाती हूँ। केवल प्यारी मादरों की हुक्म से अल्फोंस कुजूर और रोबेरटीना सुसई की सादी में बढ़म्बाई गई थी। उसी प्रकार अभी मैं कहती हूँ कि आप पत्थलकुदवा लूईसा लकड़ा नामक, मथियस की बेटी को सादी कीजियेगा, वह तो बहुत ही सीधी सादी लड़की है सो आप की, जो जैसी खुशी हो सो कीजियेगा। ईश्वर की बड़ी कृपा और असीस आप पर और आप के सारे घरानों पर होवे। मैं यह भी दृढ़ प्रतिज्ञा करती हूँ कि आप के जितने पुत्र पुत्रियाँ होंगे उन सभों को मैं अपने निज धर्म बेटे बेटियां मानकर सदा उन के लिये प्रार्थना किया करुँगी। तब ऐसे जोनस तीग्गा और लूइसा लकड़ा की सादी हो गई और मादरों ही की आज्ञा द्वारा से हम तीनों बहनों को और बढ़म्बाई जाना ही पड़ा है। सादी भोज खत्म होने पर हम लोग जोनस और लूईसा को छोड़कर सुसई चली गई। वहां डेढ़ दो घंटे ठहर कर तब अपने सरगांव चली गई। घराने के लोग खूब खुशी हुए हैं ओर हमों को बड़ा खाना खिलाने के नाम से एक मोटा घुसरा बंडा को मारे हैं। रांची सिरोमटोली घरानों के लिये एक डुंडी भेजा दिये हैं। सरगांव में घराने के लोग, हमों को बिदा देने में खूब ही दुःखित हुए, रोये, कलपे पर ईश्वर की पवित्र इच्छा जानकर हमों को बिदा किये हैं। जरुर हमलोग ठीक से समझती हैं के एक साथ तीन बेटियों को घर से बिदा देना सदा के वास्ते बहुत ही मुशकिल ओर कठिन बात तो थी पर ऐसा होना अवश्य ही था।

44 ईश्वर को बहुत 2 धन्यवाद होवे। अन्त में जब यह बिमारी बिल्कुल मिट गई तो पीछे स्कूल फिर खुल गया। हम लोग पहले की नाईं अपने2 कामों को फिर करने लगीं। तब कुछ दिनों के बाद में, हम लोग सच्चाई से बोलती हैं कि निःसन्देह यह असीम दयालु परमेश्वर ही के करतूत से ऐसा हुआ है कि बहुतेरे फादर, कई मादर और कई दूसरे लोगों की आखें और अधिक से खुल गईं। वे लोग अपने आप से लाठ बिषप को गवाही देकर बोल उठे कि हो न हो आप इन लड़कियों को बिन देर किये धर्मसंगत की जीवन व्यतीत करने की कृपा कीजिएगा। पहले हम लोग कहते थे कि अविवाहित रहना इस देश का नियम विरुद्ध है, इसलिये कभी हो नहीं सकता है। इस मुल्क में कोई भी बे सादी के रह नहीं सकते हैं इत्यदि2। परन्तु हम लोग इन लड़कियों की चाल, बात और बिशेषकर इन के कामों को देखकर पूरे तौर से मालूम करते हैं कि इन्हों का इरादा जो है सो खूब ठीक तथा पक्का है। इालिये जब कि दूसरे 2 देश की लड़कियाँ संगति जीवन व्यतीत कर ईश्वर की बड़ाई और आत्माओं की मुक्ति के हेतु कितने2 धर्म काम करती हैं तो यहां इस देश में भी क्यों नहीं हो सकेगा? इन लड़कियों की कुँवारी रहने की तेज और दृढ़ इच्छाओं को मालूम करके, अब हम लोग खूब समझ

गये हैं। इस वास्ते हो न हो, यह तो परमेश्वर ही का मनोरथ है। वह जरुर से यह चाहता है कि इस जंगली देश की लड़कियाँ भी, उसे विशेष रीति से प्रेम, सेवा और आत्मा बचाव के कामों में अपने को बिल्कुल दे डालें। सो हे मान्यवर प्यारे बिषप ! आप ठीक से इसके बारे में सोच विचार करके देख लीजिये कि क्या करना होगा।

45 इन बात, कामों की पूर्ति में सब से अधिक चेष्टा किये हैं Rev. Father Joannes De Smet S.J. कलकत्ते की Loretin Provincial Rev. Mother Mary Gonzaga Joynet aur Ranchi ki bari प्रधानी Mother Mary Teresa Bonner. ये तीन जन विशेष जन हैं जो शुरु से अन्त तक, अपनी पूरी शक्ति भर कोशिश किये हैं कि सब ठीक हो जा सके। तब आखिर में लाठ बिशप बहुत2 सोच बिचार करने के बाद में सोदालिती याने निष्कलंक माँ कुँवारी मरिया की संगत स्थापन की छुट्टी 8 दिस्म्बर 1896 ई. में दे दिये हैं। तब प्यारी मादरों ने प्रायः 50 सीधी लड़कियों के नामों को एक कागज पर लिखकर, ठहराए हुए स्थान पर तीन महीने टांग रखी थीं। तब, जब2 मादर लोग उस कागज पर लिखी हुई लड़कियों की भूलें देख पातीं, जब2 उन्हों के नाम सिद्ध में कुछ चिन्ह दिया करती थीं। पीछे जितनी लड़कियां योग्य ठहरीं, उन को तब छोटा तगमा, पतला नील रंग फीता द्वारा दिया गया है। तब फिर उन पतला फीता पायी हुई लड़कियों का नाम, चुनाव के निमित्त और टांगा गया। अन्त में जो2 लड़कियां अच्छी सुचाल की निकली है उन्हें कुँवारी मरिया खिस्तानों की मदद का पर्व अर्थात् 24 मई 1897 ईस्वी में Rev.Father Chrysanth Spart S.J. हाथ से कुँवारी मरिया का तगमा, चौड़ा नील फीता सहित असीस होकर के 12 लड़कियों को दिया गया है। यही तो राँची में लड़कियों के लिये सोदालिती का पहला शुरु दिन हुआ है।

46 आगे वर्णन हो चुका है कि कैसे पूर्राप्रसाद नामक ने अपनी दो बेटियों याने बेर्नादेत्त, सेसिलिया और भतिजिन बेरोनिका को विवाह कराने के निमित्त बहुत ही जोर जुल्म कर गये थे। मगर ये तीनों लड़कियां अपने2 मतलबों में स्थिर रहके, दृढ़ता पूर्वक भाई कुटुम्बों की सभा में सदा कुँवारी रहने का पक्का इरादा को स्पष्टता से स्वीकार करके 10 आक्टोबर 1896 ईस्वी में, घर से एक दम चल दे कोनवेंट आ गई हैं। हमलोगों की एक साथिन अर्थात् मरिया नामक, जो मुक्ता विधवा की बेटी है सो तो कोनवेंट ही में रह गई थी। पीछे 26वीं जुलाई 1897 ई. में महा मान्यवर प्यारे त्प्त्ण् क्ण् च्नसने ळवमजींसे ने ''सन्त अन्ना की बेटियों'' की संगत का नींव डालना बड़ी खुशी से मँजूर किये हैं। इस वास्ते राँची की बड़ी प्रधानी डवजीमत डंतल ज्मतमें ठवददमत ने इस बात को मालूम करके हम लोगों को अपने प्यारे माँ बाप और भाई बन्धुओं से बिदा लेने के निमित्त दो हफ्ते की छुट्टी देकर घर भेज दिई। तब हम लोग घर जाकर घरानों के साथ में बड़ी खुशी से कुछ दिन तक टिक गईं और रोज व रोज उन्हें धर्म की बातें बोलकर समझाती थी, ऐसा कि इस जुदाई के कारण उन को दिल में कुछ दिलासा और चैन मिले। जब छुट्टी के दिन पूरे हुए तो हम लोगों को उन्हों से बिदा लेना ही पड़ा है। ओह ! एक दूसरे से अलग होना, यह तो अवश्य ही अत्यन्त दुःख दायक घड़ी थी। सभों का दिल जैसा अफसोस से टूट जाकर, आंसुओं की धारा बहने लग गया। किसी के मुख से एक बात तक न निकलती थी, क्योंकि दुःख से गला जैसा दब गया था। तौभी हम लोग अपने आंसुओं को रोक, जी सम्भाल कर बड़े प्रेम से अन्तिम बार यीसु की बढ़ाई कह और प्रेम का चुम्बन देकर झट से रवाना हो गईं। वे रोते बिलापते खड़े हो टकटकी बांधे देख रहे थे। हां घरानों की उदासी सच्चाई से बड़ी ही थी सो हम समझ हैं क्योंकि तीन बेटियां एक ही घर से, एक ही दिन पर उन्हों से अलग हो जाना पड़ा है।

47 जब महा मान्यवर बिशप स्वामी से ठहराया हुआ समय आ पहुंचा तो हम लोग 26 वीं जुलाई 1897 ई, में, संत अन्ना की बेटियों की संगत में चार जन पहिली उमेदवार या मांगनेवाली ;च्वेजनसंदजद्ध हुई हैं।

48 भर्ती होने के दिन पर, पवित्र कोम्यूनियोंन लेने के पहले बेंच पर घुटने टेक कर यह ''चढ़ाव की बिन्ती'' बोलनी पड़ती है। अर्थात् – हे यीसु, मेरे छोटे चढ़ाव को मनजूर कर ! तू ने मुझे अपने को सौंप दिया है। मैं तुझे अपने को सौंप देने पां¬। मैं तुझे अपना बदन दे देती हूँ, कि साफ निर्मल रहे। मैं तुझे अपना आत्मा दे देती हूँ कि पाप से अलग होवे। मैं तुझे अपना दिल दे देती हूँ कि तुझ को नित प्यार करे। जितनी सांस, मरने

तक और मरते ही मुझे लेना है, सब को मैं तुझे दे देती हूँ। जीने में भी, मर जाने में भी, मैं तुझे अपने को दे देती, कि युग2 मैं तेरा ही रहूँ।'' बिन्ती हो चुकने के बाद, तब पवित्र कोम्यूनियों लेना।

49 हम लोगों को कई एक सरल साधारण नियम दिये गये हैं जैसे साथ2 बिन्ती प्रार्थना करना। एक साथ खाना पीना, मन बहलाना चुप्पी साधना, ऐसे जैसे कुछ ध्यान बिन्ती और धर्म पढ़ाई करना इत्यदि। फिर एक रंग ढंग का पहिरावा पहिना करती थीं। काले अंचल ;किनारीद्ध की सफेद साड़ी। लम्बी आस्तीन की सफेद कुर्ती ;जाकेटद्ध और गले पर नीले रंग के चौड़े फीते से लगे सन्त मरिया का एक तगमा ;चन्दवाद्ध और हमेशा सिर का साड़ी की घूंघट रखनी। हफ्ते में एक बार फादर से और दो बार मदर द्वारा धर्मोपदेश सुनती थीं। उपदेशक फादर उन्हीं दिनों पर Rev.Father Andreas Grignard S.J. aur Rev. Fr. Chrysanth Sapart S.J. थे।

50 जब मान्यवर लाठ बिषप ने देखा कि ये लड़कियां तो अपने पवित्र इच्छाओं में दृढ़ बनी रहती हैं। तब वह संगत के पहिरावे तथा सन्त फ्रांसीस असीसी के तीसरे दर्जे के रुल ;नियमानुसारद्ध चलाने के मतलब से हमारे सिर के बालों को नहीं काटने के बिषय सोचने लगे। इधर हम लोगों ने अपनी बड़ी प्रधानी डवजीमत डंतल ज्मतमें ठवददमत के द्वारा आगे से बिषप तथा च्तवअपदबपंस त्मअण् डण्डंतल ळवद्रंहं के पास यह खबर दिई हैं बोलकर, कि हमलोगों की संगत का पहिरावा तथा रहन सहन युरोपियन की तौर पर नहीं, लेकिन हमारे निज देश की रीति पर हो। इस वास्ते हम लोगों की यह अर्जी है कि कुछ प्रकार की साड़ी ही हमें दिई जाय तो भला होगा फिर हम लोगों को यह भी सुनने में आता है कि आप लोग हमारे सिर के बालों को न काटने का बिचार कर रहे हैं, सो यह बात हम लोगों को नहीं पसन्द आती है। हमारी यह तेज2 ईच्छा है कि हम लोग समस्त दिल ओ जान से ईश्वर ही की हो जाय। हां सच बात है कि स्त्री जातियों की सिंगार तो विशेष कर सिर के बाल ही हैं सही, मगर उसे भी हम लोग खुशी से त्याग देने को तैयार हैं। यदि आप लोग तिस पर भी बालों को काटना मँजूर न करेगें तो जानिये कि हम लोग निज हाथों से अपने आप काट लेंगी।

51 हम लोग युरोपियन पहिरावे तथा रहन सहन इस कारण मनजूर नहीं करती क्योंकि हमारे देश की बहुत लाचारी हालत है सो यदि हमें पीछे कुछ मुशकिलता आ पड़े, या कि इस देश में धर्म की सतावट हो जाय, जैसे दूसरे2 देशों में होता है इत्यदि2 तो हमलोग दशा2 के अनुसार अपनी जाति भाई कुटुम्बों के बीच में रह सकेंगी। इन सब हमारी इच्छाओं को मालूम कर महा मान्यवर ठपेीवच च्ंसने ळवमजींसे और मान्यवरीन त्मअण् डवजीमत च्तवअपदबपंस बहुत2 सोच करने लगे। अन्त में महा बिषप तब अपने निज इच्छानुसार साड़ी की बिनावट का नमूना देकर, अर्थात् आठ गजवाली नीले रंग की साड़ी, जिस के किनारे में दो सफेद धारी हो तैयार कराया है। कमरबन्द सफेद सूती रस्सी, जो तीन2 लपेट की पांच गांठ हो याने सन्त फ्रांसीस असीसी के पांच घावों की यादगारी में बनवाया है। पहनने के लिये सफेद लम्बी कुर्ती या कमीज और सिर पर सफेद पट्टी।

52 लाठ बिषप स्वामी अपने निज हाथों से सन्त अन्ना की बेटियों के लिये रुल अर्थात् लाईन कानून कुछ बढ़ा चढ़ाकर लिख दिये हैं। तब Rev. Father Joannes DeSmet S.J. के हाथ देकर बोले कि आप सहज हिन्दी में इसे लिख दीजिये तो उसने ऐसा ही किया है। पीछे हम लोग उसी का नकल करके अपने2 लिये रख लिई हैं। असीम दयालु परमेश्वर की मिहरबानी से, हम लोगों के लिये यही सुभाग्य दिन जिसे हम लोग बहुत दिनों से जोहती थीं आ पहुंचा। 6वीं फरवरी 1899 ई. में हमलोग चार जन संगत के पहिरावे से सुशोभित किई गईं। महा मान्यवर त्प्त्प्क्प्च्नस ळवमजींसे दम स्वंय आप ही क्रिया कर्म किया है। पहिरावे जैसे कुछ आगे वर्णन हो चुका है। याने आठ गज वाली नीले रंग की साड़ी, जिस के किनारे में दो सफेद धारी। कटिबंद सफेद सूत की रस्सी, जिस में तीन2 लपेट की पांच गांठ और ये बड़ी सी काली रोजरी माला। इन सब चीजों को असीस करके हम लोगों को एक एक कर दिया गया है। सिस्टर होते घड़ी तो दसतूर से नाम बदल के नया नाम दिया जाता है। मगर मान्यवर महा बिषप की ईच्छानुसार कि ये लड़कियां संगत की शुरुवाली हैं तथा सब लोग

इन्हें अपने निज नामों से पहिचानते हैं इस काररा से नाम नहीं बदलेगा पर अगला नाम रखना ही पड़ेगा। हम चार जन के ये नाम हैं अर्थात् सिस्टर अन्ना बेरनादेत्त, सिस्टर अन्ना सेसिलिया, सिस्टर अन्ना बेरोनिका और सिस्टर अन्ना मेरी।

53 मान्यवरीन च्तवअपदबपंस त्मअण्डण्डंतल ळवद्रंहं खुद आप इस भाग्यवान हर्षित दिन की खुशी बढ़ाने तथा पूरी करने के लिये, हम लोगों की एक अति पुरानी2 प्यारी सिस्टर तेरेसा नामक जो कि चार लोरेटीन मादर लोग 19 मार्च 1890 ई. में पहिली बार रांची आई थीं उन्हीं के बीच में की थी, उसे अपने साथ लाकर आई है। ऐसे तब अपनों की उपस्थिति से हम लोगों को ये बयान आनन्द प्राप्त हुआ है। फिर जरुर हम लोगों की प्यारी मादरों का दिल भी अत्यन्त आनन्द से उमड़ जाकर फूला न समाया होगा। जब कि पहिली बार उन्हों ने देखा कि कैसे उनके गरीब लड़कियां अपनी प्यारी मादरों की भली चाल नमूनों को देख रेख करके, वे भी अपने को यीसु की सेवा में दे देती हैं। खुशी से भर जाकर किसी2 की आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। उसी दिन पर वही पुरानी प्यारी ैपेजमत ज्मतमें नामक ने ईश्वर को धन्य मान के सिस्टर अन्ना बेरनादेत्त को अपनी गोद में लिये, आगमवक्ता बुढ़े सन्त सिमेयोन के अनुसार पुकार उठी कि ''हे प्रभु अब मुझे अपने गरीब दासी को खुशी से मरने दीजिये, क्योंकि अब मैं अपने निज आंखों से आप के अदभुत प्रेम का फल देखने पाई हूँ। मैं देखती हूँ कि आप इस जंगली देश की लड़कियों के बीच में से भी अपनी प्यारी दुल्हिन होने के लिये चुन लिये हैं।''

54 इस सुअवसर तथा हर्षित दिन ही यह, हमारे मान्यवर पिताजी पूर्याप्रसाद के भी हम लोगों के साथ मेल मिलाप कर लिया और आदर सत्कार में खूब बाजा गाजा करके उत्सव मनाया तथा भाई बन्धु और मित्र गणों को नेवता कर बड़ा भोजन खिलाया। बहुत2 लोग बाप के घर में चारों ओर से आ गये थे। एक ही दिन पर आल्फ्रेद नामक हमलोगों के एक भाई का विवाह भी होने को था। तब तीन बेटियों और बेटे के नाम पर साथ में, सब भाई बंधु और नेवताहारियों को खिला पिला सके। मगर महा मान्यवर बिषप स्वामी ने पिताजी को पास बुलाकर कह दिये हैं कि ''देखिये पूर्याप्रसाद ! आप की तीन बेटियां ईश्वर की होती हैं । इस वास्ते ईश्वर के तरफ का अर्थात् आप की बेटियों की धर्म क्रिया आगे होना उचित है। बेटे की सादी पीछे दूसरे दिन पर होगा।'' महा बिषप के कहे मोताबिक तब किया गया है। पिताजी ने अपने बेटे बेटियों के नाम से खूब धूम धाम मचाकर बड़ा खाना खिलाया पिलाया ओर सब लोगों को सन्तुष्ट कर दिया है।

55 हम लोग दो बरस दो महीने तक नवशिष्य ;छवअपबपंजमद्ध में रहीं। एक मान्यवरीन प्यारी डवजीमत डंतल प्उमसकं व्सवनहीसमद नामक हम लोगों की गुरुआइन ;छवअपबम डपेजतमेद्ध थी। वही हम लोगों को कुछ2 देख भाल करके अपनी अच्छी बात काम तथा सलाहों से अगुवाई करती थी। इस त्योहार के हो चुकने के बाद श्रीमती प्यारी च्तवअपदबपंस त्मअण् डण् डंतल ळवद्रंहं तथा वही पुरानी बूढ़ी ैपेजमत ज्मतमें जो संग में आई थी उन्हें कलकत्ता लौटना पड़ा। इसी लौटते घड़ी में च्तवअपदबपंस डवजीमत हम लोगों की राँची प्रधानी बड़ी डवजीमत डंतल ज्मतमें नामक को बदल करके उस की जगह में एक नई डवजीमत डंतल ळमतजतनक को रख छोड़ी और पहली वाली को ले गई। यह बड़ी मादर है जो हम लोगों के लिये एक अति प्यारी2 पहली धर्म माँ की नाई होकर, सब कुछ की चिन्ता फ्रिक करके बहुत ही दुःख उठाई और मिहनत किई है। जिससे हम लोग धर्म संगत के जीवन को प्राप्त का सकें सो बदल गई है। ऐसी प्यारी मादर को खो देने से हम लोगों के लिये बहुत2 ही अफसोस का कारण हुआ है लेकिन ईश्वर की पवित्र ईच्छा पूरी हुई है। इस संसार में मरते दम तक ऐसी दशा तो होती है अर्थात् सुख के साथ2 हमेशा दुःख भी अवश्य मिला हुआ रहता है। हम लोग दिल टूटा हो बहुत रोती बिलापती हुई अपनी प्यारी मादर को यथा शक्ति अपना कृतज्ञता प्रगट किई। यह कहके कि प्यारी धर्म मां, हम लोग आपके प्रेम तथा बायान उपकारों की याद, हमारे दिलों में छाप देकर, जीवन भर कभी न भूलेंगी। आप के लिये प्रार्थना किया करेंगी। हम लोग सदा आप की ऋणी हो रहती हैं। बदला चुकाव हमों से नहीं हो सकता है। ईश्वर ही हमारे पलटे आप को इस लोक तथा परलोक में बदला फिराके बड़ा इनाम देवे इत्यदि कह कर प्रेम से बिदा लिई है। प्यारी मादर भी हमों के उदासी दिलों में दृढ़ता, साहस

और शांति की बातों से आनन्दित रहने को खूब उसकाई हैं बोलकर कि ईश्वर की इच्छा ऐसी ही है। हम लोग एक दूसरे की दृष्टि से दूर रहते भी, दिल के प्रेम तथा सोच से साथ हो, प्रभु की बड़ाई और आत्माओं की मुक्ति के लिये खूब काम करेंगी। ऐसा करने से सब कुछ भला होगा। आस्रा करती कि ईश्वर की कृपा से हम लोग फिर एक दिन मुलाकत हो सकेंगी इत्यदि कहकर यीसु की बड़ाई करके और असीस देकर बिदा हुई है।

56 दो बरस के बाद अर्थात् नवशिष्य (Noviciate) का समय चुक जाने पर हम लोगों को पहले मन्नत ग्रहण करने की मंजूरी किई गई। महामान्यवर त्प्त्प्क्ण् च्नस ळवमजींसे ने फिर अपने निज हाथ से संगत के पहिले नियमों को बहुत ही बढ़ाकर लिख दिये है। परन्तु हाय ! हाय ! उन्हीं दिनों पर महा मान्यवर प्यारे बिषप स्वामी का स्वास्थ्य बिगड़ जाने लगाथा, इसी वजह से वह आप हम लोगों की मन्नत (Profession) के दिन पर उपस्थित न हो सके हैं परन्तु वह अपने नाम से (Father Superior Britius Mauleman S.J.) को भेज दिये हैं। उस ने आकर 8 अपरील 1901 ईस्वी में हम लोगों को पहले मन्नत (Vow) के दिन में हर एक सिस्टर को सन्त अन्ना का एक चन्दवा (rxek) और एक अगूंठी असीसित होकर दिई जाती है। काले रंग के फीता द्वारा, चन्दवा सिस्टर के गले का हार बना रहता है। इस संगत का पहिरावा ऐसा ही है।

57 ओहो ! हम लोगों के आपार सुख का वर्रान अब कैसे किया करें? असीम सर्वशक्तिमान, असीम दयालु ईश्वर के बड़े अचम्भित प्रेम का गुणगान कैसे करें? उस ने इतनी बड़ी कृपा किई हैं कि वह हम लोगों को अपना निज बना लिया है। अब हम लोग प्रत्येक सच्चाई से यह कह सकती कि यीसु आप मेरा सर्वस्व और मैं आप के निज हो गई हूं। ओह ! हमारे सुभाग्य नसीब की बढ़ाई कौन समझने और नापने सकता है? यही तो मनुष्यीक बुद्धि तथा समझ के बाहर है। हां ईशवर असीम मिहर्बान और दानदाता की बिशेष कृपा से अकेला, हम लोग इस उंचे और पवित्र हाल तक उठाई गई है तो हमें जरुर से यह उचित है कि उस को यथा शक्ति अपने समस्त दिलोजान से प्यार, आदर और धन्यवाद देवें। हां सुख, दुःख, थकावट, तंगहाली याने जो कुछ भी हो, अपने प्राण निछावर तक उस की सेवा में सदा उत्साहित तथा दृढ़ बने रहने की कोशिष किया करें।

58 हम लोगों के मन्नत करने के मनोहर खुश दिन के लिये, अति प्यारी श्रीमती च्तवअपदबपंस त्मअण् डण्डण् ळवद्रंहं ने आप फिर उपस्थित होकर, हमारे सुख आनन्द को दुगुणी से चौगुणी बढ़ा दिई है सो उन्हें कोटि कोटि धन्यवाद। उस की दया और भलाईयां अकथनीय है। इस के अतिरिक्त और दूसरे2 उपकारक गणों को भी हम लोग सारे दिल से धन्यवाद देती हैं।

59 इस उत्सव में फिर और प्रिय पिता माता तथा मित्र बन्धुगण हमारे खुशी में शामिल होकर बहुत2 ईश्वर को धन्यवाद दिये हैं जिस के आपार प्रेमी दृष्टि डालने से छोटानागपुर में ऐसा महात्मा का काम निकाल दिया है।

60 हम लोगों के अति मान्यवर प्यारे Rev. Father J.De Smet S.J. यह उत्सव में हाजिर न हो सका क्योंकि उन्हीं दिनों में वह मोरापाई में था। उस ने वहां भी इस धर्म संगत के विषय में चर्चा कर रहे थे। इस की बातें सुनकर मोरापाई से चार बांगाली लड़कियां भी रांची के जांच घर में आ गई। जिस रोज हम लोग अपना पहिला मन्नत किई हैं उसी दिन पर ये बांगाली लड़कियां (Postulants) के दर्जे में भर्ती हुई हैं।

61 बड़ी उदासी की बात कि इसी साल पर 4 जुलाई 1901 ईस्वी में अति प्यारे महामान्यवर त्प्त्प्क्ण् च्नस ळवमजींसे की मृत्यु हो गई है। ईश्वर उन्हें अपने बड़े2 कामों का प्रतिफल देने के निमित, अपने पास बुला लिये हैं। ईश्वर उन्हें चैन और आराम देवे।

62 26 जुलाई 1901 में हम लोग फिर मन्नत चढ़ाई हैं कि वार्षिक मन्नत का डौल ठीक होवे।

63 26 जुलाई 1901 में हम लोग फिर एक वर्ष की मन्नत किई हैं। इसी 1902 ई. की 8 वीं दिसम्बर को ये चार बंगाली लड़कियां राँची कोनवेंट ही में संगत के पहिरावा से पहिराईं गईं। उन के नाम हैं सिस्टर अन्ना रेजीना, सिस्टर अन्ना बेरोनिका, सिस्टर अन्ना अगाथा और अन्ना मगदलेन तब बात ऐसी ठहराई गई कि अब छोटानागपुर में प्यारी लोरेटीन मादरों की जगह पर, बेलजियुम से उर्सुलाईन मादर लोग आवेंगीं। इस कारण ये चार बंगाली सिस्टरें मादरों के साथ जाएंगी और संगत की शाखा, बंगाली लड़कियों के लिये शुरु करेंगी। वे लोग लोरेटीनों के अधीन रहती हैं जब तक उन के लिये घर न बना था, तब तक वे एनटल्ली में टिक गई थीं। पीछे उनके लिये मोरापाई में उठने लगा। वहीं उन का मातृगृह है। वहीं उन का जांचपन, क्रिया कर्म और शिक्षा दीक्षा इत्यदि इत्यदि मान्यवरीन लोरेटों मादरों के द्वारा से होता है।तो ईश्वर की आपार कृपा के चलाने से, जो मान्यवर प्यारे Rev. F.J.DeSmet S.J. ने यहां छोटानागपुर में लड़कियों के लिये धर्म संगत जीवन का सलाहकार और मददगाार थे, उस एक ही प्यारे फादर के कामों से, बंगाली लड़कियों के लिये भी धर्म संगत जीवन का द्वार खुल गया है। इधर हम लोग अपनी प्यारी माननीय मादरों से बिछुड़ जाने पर, जो दुःख हुए हैं जिनका वर्णन नहीं हो सकता है। वे हें शुरु में आकर 12 वर्षों तक अपने निज खर्च से खाना पीना, थाली बर्त्तन, कपड़ा लता इत्यदि देकर इस जंगली मुल्क की लड़कियां तथा स्त्रियों को ईश्वर के लिये बहुत प्रेम करके चिन्ता और कष्ट उठाके सिखलाई हैं। वे ही हैं जो काथोलिक धर्म के विश्वास रुपी बीजों को दिल में रोप दिई हैं हां उन्हीं के कामों से जैसा छोटानागपुर की लड़कियों और स्त्रियों के बीच में परस्पर धर्मीक प्रेम, सुचाल तथा शिक्षित होने की अभिलाषा यहां तक जड़ पकड़ी कि होते2 समय बीतते सभी समूचा छोटानागपुर जैसा धर्म और शिक्षा की उन्नति के बड़े पेड़ होकर फूलने फलने लगा है। ओह उन्हों के अपूर्व प्रेम, दया और मिहनतों का वर्णन अकथनीय है। इस वास्ते उन की और हमारे दिलों में भी तथा धन्यवाद की याद चिर काल लों सदा बनी रहेगी । ईश्वर उन्हें अपने अनगरिाात उपकारों का बड़ा प्रतिफल देवे।

64 नवम्बर 1902 ई. से 4 अपरील 1926 ईस्वी तक अतिमान्यवर प्यारे Rev. Father Alphonse Sharlachen S.J. हम लोगों के सब आत्मिक तथा शारीरिक जरुरतों के बिषय कया बड़ी क्या छोटी क्यों न हो, हर एक बात कामों की बहुत2 देख भाल करके चिन्ता और परवरिश किये है।

65 मान्यवर बिषप स्वामी की आशा से यही फादर ने सन्त अन्ना की बेटियों के अगला आईन ;त्नसमद्ध को बहुत ही बढ़ाया है गिर्जा के आईन अनुसार और 1904 ईस्वी में महा मान्यवर प्यारे बिषप R.R.d. Britius Meuleman ने इस नया रुल को ग्रहण किया है।

66 यही मान्यवर प्यारे Rev.Father Alphons Scharlachen S.J. ने हम सन्त अन्ना की बेटियों के लिये रेाज2 की ''धर्म बिषयक ध्यान संग्रह'' तथा ''भली माता का दर्पण'' ये दोनों किताबें जो हम लोगों के लिये उत्मोत्तम लाभदायक तथा सब धर्म बातों की मधुर रस भरी स्वर्ग की ओर मन ओर दिलों को लुभाकर खींच लेनेवाली हैं उसे बड़े फिक्र और मिहनत उठाकर रचे हैं। ओह ! उस ने हम लोगों के लिये अपने को बिल्कुल बलि कर गये हैं। क्या तेज गर्मी का लूह, क्या मूसलाधार वर्षा होवे, क्या ठंड से देह सिकुड़ा जाय कुछ का परवाह भय न कर प्रतिदिन हम अपने गरीब छोटी बेटियों को धर्म उपदेश तथा सिखलाई देने, हमारे आत्मिक हाल जानने तथा प्रत्येक के दुःख सुख, घटी कमी के सब बिषयों का निरीक्षण करने को आया करते थे। हां हम सच्चाई से कहती हैं कि जैसी मुर्गी अपने छोटे2 चेंगनों को सब प्रकार जोखिमों से बचाने के वास्ते अपने डेनों तले लुकाकर बचाती है उसी भांति वे हमारी रक्षा और पालन पोषण किये हैं अपने मरण तक। इतने परोपकार का पल्टा हमों से दिया जा ही न सकता है। हम सदा उसके ऋण उऋनि हुए है। असीम दयालु स्वर्गीय पिता ने उसे अपने भले कामों का इनाम ग्रहण करने के लिये 4 अपरील 1926 ईस्वी के पास्का एतवार दिन अपने पास बुलाया है। ईश्वर उन्हें आनन्त आराम और चैन बखशे

67 13 जवनरी 1903 ईस्वी में बेलजियुम से माननीय प्यारी उर्सुलाइन मादर लोग रांची छोटानागपुर में लोरेटो मादरों की जगह पर आई हैं शुरु में वे चार ही जन आई जैसे हमारे लोरेटीन मादर लोग आई हैं। जो

शुरु उर्सुलाइन मादर आई हैं वे ये हैं 1ला Reverend Mother Gonzaga, Mother Anthony, Mother Ursula aur Sister Sabina. पीछे और और आने लगी हैं। उन्हों के हाथ हम सन्त अन्ना की बेटियों पड़ गईं। वे भी शक्ति भर हमारी चिन्ता और फिक्र करके पालन पोषण का भार अपने ही पर ले लिई थीं। उन की रक्षा में हम लोग 16 वर्षों तक रहके साथ2 काम किई हैं। उन माननीय प्यार मादर की दया, प्रेम तथा सब भलाईयों के लिये दिलोजान से धन्यवाद देती हैं। धन्यवाद भे देती हैं कारण कि वे हमारे राँची छोटानागपुर वासियों के आत्मा बचाव के हेतु आने अति प्यारे मां बाप भाई बहिन, कुटुम्ब तथा मित्रगरों को, हां स्वदेश तक त्याग देकर इतने दूर मुल्क में आई और अत्यन्त परि.श्रम उठाके काम करती हैं।

68 अन्त में कुछ जरुरी दशानुसार हम लोग उर्सुलाइन मादरों से अलग किई गई हैं। अब सन्त अन्ना की बेटियों का अपना अलग कोनवेंट (मठ) है। अपने निज प्रधानी है जिसे ''माता'' कहके पुकारती है। निज मातृ गृह रांची में है। जहां उमेदवार ;च्वेजनसंदजेद्ध तथा नौसिख्यों ;छवअपबपंजमद्ध का घर है जिसमें उन्हों का जांचपन, क्रियाकर्म तथा शिक्षा दीक्षा होता है। यहीं से प्रति वर्ष मिशन क्षेत्र के कई जगहों पर इधर उधर तीन चार करके सिस्टरें भेजी जाती हैं। वहां जेसुइत फादरों की रक्षा में, लड़कियां के लिये स्कूल और स्त्रियों तथा बेस्कूल वाली लड़कियों को धर्म की शिक्षा दीक्षा दिया करती हैं। उन्हें बपतिस्मा, पाप स्वीकार, प. कोम्युनियों तथा विवाह साक्रमेंत इत्यदि ठीक से लेने को तैयार करती है।

69 सन्त अन्ना की बेटियों का अस्ल बड़ा प्रधान तो महा मान्यवर धर्माध्यक्ष खुद आप ही है और उस के नीचे दूसरा प्रधान वही है जिस को बिषप स्वामी सिस्टरों का गुरु फादर हाने को नियुक्त करता है। इन्हीं दोनों के द्वारा से सिस्टरों का देख भाल तथा आत्मा और बदन की सब जरुरत परवारिश होता है।

70 26 जुलाई 1903 ई. में तीन वर्ष की मन्नत किई हैं। तब पीछे फिर 26 जुलाई 1906 ईस्वी पर जीवन की मन्नतों से अपने को बिल्कुल यीसु को दे दिई है। इस हर्षित तथा सौभाग्य दिन पर महा मान्यवर R.R. D. Britius Meuleman स्वयं आप हम लोगों की मनतों को ग्रहण किये है। उसी दिन बहुत ही बड़ा पर्व प्यारी उर्सुलाईन मादरों की रक्षा में माना गया है।

71 हम सन्त अन्ना की पुत्रियाँ, उर्सूलाइन मादरों के साथ में रहकर रांची 1903, खूंटी 1904, टोगों 1906 और रेगाड़ी 1908 से काम किई हैं फिर उन्हीं के अधीन रहके इधर उधर दिहात भेजी गई हैं जैसे सोसो और नवाटोली में 1903, कुर्डेग 1906, समटोली 1915 और जशपूर गिनाबहार 1918 में। ऐसे कुल नव जगहों में काम करती आई हैं 1919 नवम्बर आखिरी तक। पीछे उर्सुलाईन मादरों से एक दम अलग किई जाने पर भी मान्यवर प्यारे धर्माध्यक्ष की पसन्द अनुसार चार पांच, चार पांच करके इधर उधर सिखलाई के कामों के निमित सिस्टरें भेजी जाती हैं जैसे–समटोली, कुर्डेग, जशपुर, गिनाबहार, कटकाही, नवाढी और मझाटोली 1919 से, हमीरपुर 1921 से, मंडार और गैबीरा 1922 से, छेछाड़ी महुआडांड़ 1923, तोरपा 1924, लचड़ागढ़ 1926, दिघिया 1927, कर्रा 1928 और जशपूर तपकड़ा 1934 से।
मगर यह भी जानना है कि रांची, खूँटी, टोंगो, रेंगाड़ी ओर बसीया नवाटोली में न्तेनसपदम ब्वदअमदज है और 1926 ई. से गैबीरा जीम क्ंनहीजमते व्ñिभ्वसल ब्तवे के हाथों में पड़ा है।

72 28 अगस्त 1906 ई. में एक बड़ा बहुत ही शोकमय दुर्घटना हुई जिस से तीन सन्त अन्ना की सिस्टरें एक ही दिन में हैजे की बिमारी से परलोक सिधारी हैं। अर्थात् उसी वर्ष में इधर उधर चारों ओर हैजे की बिमारी फैल गई थीं। इस बिमारी के पंजे में पड़ के सैकड़ों आदमी मर2 गये हैं। लोग गोद के छोटे2 अनाथ बच्चों को यहां उर्सुलाइन मादरों के पास में लाते थे। ये बच्चे बिमारी घर से लाये जाने के काररा अवश्य उनपर बिमारी लगी थी। मादर लोग यह न समझ कर, खुशी से उन्हें ग्रहण करके सन्त अन्ना की सिस्टरों की रक्षा में दिई कि वे उन की खबरदारी करें। सो वे आज्ञा पाकर रात दिन उन की सेवा करने लगीं तो ऐसा हुआ कि तीन प्यारी सिस्टरें ओर एक महीने की नन्हीं बच्ची हैजे की बिमारी से एक ही दिन पर चल बसी हैं।

इसी घड़ी महा मान्यवर प्यारे त्ण्त्ण्क्ण्ठतपजपने डंनसमउंद कलकते से आकर मनरेसा हौस में हाजिर थे सो ज्योंहि वे गरीब सिस्टरों की खबर पाये त्योंहि तुरंत आप देखने आये हैं और प्रत्येक की पलंग के पास जाकर उन्हें असीस दिये हैं जब मान्यवर बिषप स्वामी, सब हाल बिषप से ठीक मालूम किये कि किस काररा से ऐसे शोकमय आफत हुई है तो वे अति ही दुःखित हो बोल उठे कि ''आज की तारिक से फिर ऐसा कभी न होगा कि गोद के बच्चे सन्त अन्ना की सिस्टरों के हाथ सौंपा जाय !!! एक दो बालकों के पालने में हमारे सिस्टर लोग, ऐसा एक ही दिन में मर जाने से मिशन का काम कैसे चलेगा? नहीं2 कभी नहीं। अगर मादरों की ईच्छा, ऐसे छोटे बच्चों को पालने का है तो वे आप इस की उपाय कर लेवें, मगर गरीब सन्त अन्ना सिस्टरों के द्वारा ये यह काम कभी नहीं कराना है यह हमारा भारी हुक्म है क्योंकि वे दिन भर क्लास और नाना प्रकार के कामों में लगी रहती है और तब रात दिन बच्चों को पालन ,सेवा करने का यह भारी काम कराना, यह नहीं हो ही नहीं सकता है इत्यदि।''

73 उसी समय से हम लोग गोद के बच्चों को पालने का भार कभी न लेती है। कई बार लोगों से सह सुनने में आती है कि ''क्यों सन्त अन्ना की सिस्टरें, अनाथ नन्हें बच्चों को ग्रहण न करती, जैसे दूसरी2 मादर लोग करती हैं?'' बोलने वाले आप या उस के अड़ोस पड़ोस के लोग क्यों न ग्रहण करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर आप पहिले देवे। हम लोग सन्त अन्ना की बेटियों का काम दूसरे प्रकार का है। सो जाने। सिस्टर लोग बहुत2 गरीब और लाचार हैं सो किसी से छिपा नहीं है फिर बोलने की जरुरत ही क्या है। इस देश के नियमानुसार किसी भी लड़की जाति को अपने घर से कुछ भी हिस्सा या बाँट तो नहीं दिया जाता है जिस ये उन्हें कुछ भी धन हो तो कैसे बच्चे का खर्च और नौकरानी को तलब देवें।

74 जैसे शुरु में बतलाया गया है कि 19 मार्च 1890 ईस्वी में मान्यवरिन लोरेटीन मादर लोग राँची में स्कूल खोलीं। इस स्कूल के खुलने की यादगारी में हम लोग 1915 ई. में पच्चीस वर्ष पूरे होने में खुशी से उत्सव मानी हैं। माननीय लोरेटो मादर लोग भी इस उत्सव में भाग लिये हैं और अपनी ओर से एक चिन्ह रुपी ''पैर वाली सिलाई माशीन'' दान हम लोगों के वास्ते भेज दिये हैं।

75 आगे यह भी वर्णन हो चुका है कि 26 जुलाई 1897 ईस्वी में सन्त अन्ना की संगत स्थापन हुई है जिस की यादगारी में हम लोग एक उत्सव मानने की उत्सुक करती थीं। मगर शुरु की चार सिस्टरें के बीच में की दो जन, एक ही साल के अन्दर में याने 1921 ई. के 29 नवम्बर अर्थात् सन्त कुंवारी मरिया का मन्दिर में चढ़ावे के पर्व के दिन में, प्यारी सिस्टर अन्ना बेरोनिका नामक और फिर दिसम्बर 30 ता. में प्यारी सिस्टर अन्ना मेरी, ये दोनों जन थैसीस बिमारी से अति पीड़ित हो बड़े धीरज तथा साहसी दिल से यह भयानक बिमारी की तकलीफ सह लिई हैं। अपने होश में रहते ही बड़े भक्ति और प्रेम से पाप स्वीकार, अन्तमलन और पवित्र कोमून्योन ग्रहण करके खूब भरोसे के साथ अपने अति प्राा प्यारे स्वगीय दुल्हे यीसु ख्रिस्त में वे दोनों बड़े चेन ओर शांति से सो गईं हैं।

76 तब जो जन जीवित हैं हम लोग तीन रोज का आत्मिक साधन करके इस बड़े पर्व की याद में, अर्थात् इस दिन में असीम दयालु ईश्वर का बड़ा प्रेम, असीस और कृपा उंडेला गया है जिस का दिलोजान से धन्यवाद देने के लिये अपने को तैयार किईं। 25 नवम्बर 1922 ई. में खूब ही धूमधाम से यह उतसव माना गया है। बड़ी गिर्जा में, बड़ा पवित्र मिस्सा का बलिदान चढ़ाया गया हैं हम लोग दोनों अपनी मन्नतें दुहराई हैं। पवित्र मिस्सा से निकलते घड़ी बेंड बजाये गये और बम गोले छुटाए गये हैं जिससे मानो आकाश पाताल इन की ध्वनि से गूंज उठने लगा था। बेंड तथा गोले की आवाज एक संग मिल जाने से मानों सभों के मन और दिल खुशी के मारे उछलने धड़कने लगां सब कोई सहमत होकर ईश्वर के इस बड़े दान और कृपाओं के लिये सहमत दिलोजान से धन्यवाद देने लगे। इस बड़े खुशी के उत्सव में भाग लेकर, लोगों से जो2 दान मिले हैं जिसका हम फिहरिस्त लिख देती हैं अर्थात् मान्यवर न्यारे ँमबनसंत थ्जीमत गरों से 200 रुप्ये, माननीय प्यारी Lereto Matheron से 100 रुप्ये, मान्यवर प्यारे Rev. Father J. Vangerven S.J. से एक पैरवाला सिलाई मशीन, मान्यवर प्यारे त्मअण्थ्जीमत ळण्ठवूमसस से गिर्जा के लिये रकम2 की अनेक वस्तुएं जैसे धूपदानी

इन्सींस पोट, सात पाकेट मोमबती, रंगीन बती और यीसु मरिया के पवित्र दिल के सुन्दर2 छापवाला मोमबती, दो बाक्स एक एक फुट की लम्बाई यीसु और मरिया का छाप वाला सुन्दर मोम, दो बाक्स आठ इंच वाला सुन्दर छापवाला मोम और तीन इंच वाला सुन्दर छाप वाला मोम कलकते से भेज दिये हैं।प्यारी लेस स्त्रियों से 26 रुपये, मान्यवर Rev.Father Loies Cardon S.J. se 25 रु. Manresa House के मान्यवर प्यारे Rev.Father Vanlombergh S.J. से दो जोड़े पीतल का फूलदान, माननीय प्यारी Ursuline Rev.Mother Superior से खिस्तानी शिक्षा के प्रश्नोत्तर का बयान किताबें 10, और Ursuline Convent School लड़कियों से गीत, अभिनन्दन पत्र और फूलों के गुच्छे , Ursuline Convent ki शिक्षिकाओं से एक बड़ा पीतल का गगरा, St.John's High School के प्यारे लड़कों से सुन्दर अभिनन्दन पत्र, फूलों के गुच्छे, प्रभु यीसु के पवित्र दिल की एक छोटी मूर्ति तथा प्रत्येक लड़कों की ओर से एक छोटी कागज, जिस में वे अपनी2 बिन्तियां और भले2 मतलबों को लिखकर हर एक क्लास2 थोक बांधे अर्पण किये हैं फिर काथोलिक खीस्टियान भाईयों की ओर से भी सुन्दर गीत, अभिनन्दन पत्र, फूलों के गुच्छे तथा उर्सुलाइन कोनवेंट के होल में अति मनोहर नाटक सांझ में दिखाया गया है। दूसरी बेला चार बजे बड़ी गिर्जा में पवित्र साक्रमेन्त की बड़ी असीस और धन्यवाद का गीत, याने ''ज्म क्मनउष गाया गया है। ऐसे तब छोटे बड़े एक संग मिलकर दसीस महान ईश्वर को, उस के बेबायान अद्‌भुत कृपाओं के लिये यथाशक्ति प्रेम, आदर, प्रशंसा और धन्यवाद दिया गया है। बहुत2 परमानन्द से जय जयकार करके यह उत्सव माना गया है।

77 अब हम छोटी गरीब लाचार सिस्टरों की ओर से आप सब मान्यवर प्यारे पुरोहितगरा, मानीय मादरगरा, तथा सब 2 छोटे बड़े प्यारे लोगों को तथा सम्भव दिलोजान से धन्यवाद देती हैं क्योंकि आप लोगों ने इस हमारे बड़े प्रमोद त्योहार की पूर्ति के लिये अत्यन्त कोशिष करके सब बिषयों में मददगार हुए हैं। इस कारण हम लोग भी, आप लोागें के प्रेम तथा भलाइयों को कभी न भूलेंगीं फिर इन के बदले हमारे प्रार्थनाओं के द्वारा, सदा परमेश्वर का बड़ा असीस और कृपाओं की अधिकता मांगती रहेंगी। हां श्री यीसु के मुंह का यह बचन में आप लोगों पर लगाती है ''मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जब 2 मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से एक के साथ ऐसा किया, तब मरे ही साथ ऐसा किया '' फिर जब कि उस ने एक प्याला भर कच्चा पानी के लिये, स्वर्ग सुख देने का करार करता है, तो क्या वह आप लोगों के इतने दया के कामों के लिये, कितना ओर अधिक न देगा?

78 कुछ आगे और यह भी वर्णन हो चुका है कि 8 अपरील 1901 ईस्वी में हम लोग अपनी पहिली मन्नतें किई हैं। तिस के पच्चीसवें वर्ष के स्मरणोत्सव को ठीक 8 अपरील 1926 ईस्वीं में रखने का पक्का मतलब से सब कुछ तैयार किया गया किन्तु असीस ज्ञानी स्वर्गीय बाप की इच्छा ऐसी न थी। उस ने हम लोगों के सब मतलबों को उलट दिया है। हमें कुछ सोच तक न हुआ कि अचानक एक भारी बिपत्त हमों पर आने वाली थी। हाय ! हाय ! हम लोगों का महा मान्यवर प्यारे गुरु तथा पालक पिता जो थे अर्थात् Rev.Father A.Scharlacken S.J. को बुखार आने और शीघ्र ही उसे भारी नीमोनिया पकड़ के दबा मारा है। ऐसा कि छः सात दिन ही में वह परलोक सिधारे है। उस के मृत्यु से हमलोागों को तो दुःख हुआ सो केसे बयान करें। ईश्वर ही दुःख और सुख का मालिक है तो । इस काररा उस के पवित्र नाम की यश और बड़ाई होवे सदा 2 तक।

79 स्वर्गवास हुए मान्यवर गुरु तथा पालक पिता के बदली में, तुरन्त ही महा मान्यवर प्यारे त्मअण्थ्ंजीमत थ्रमकमतपबने च्मंस ैण्श्रण नियुक्त हुए हैं हम लोग उस के मिलने से बहुत खुश हुई ओर ईश्वर को अत्यन्त धन्यवाद दिया क्योंकि यही एक अति प्यारा पुराना पहचान वाला फादर था। जिस समय हमलोग लोरेटो मादरों के स्कूल लड़कियां थीं उसी वक्त यें फादर रोज 2 हमें धर्म की शिक्षा देने के लिये आया करते थे। जब 1895 और 1896 ई. के बीच भंयकर महामारी और अकाल से लोग बहुत दुःख तकलीफ में पड़े थे, उसी घड़ी डंदतमें भ्वनेम में जितने फादर लोग रहे, सो सब के सब रोज 2 आदमियों के बदनिक तथा विशेषकर आत्मिक मदद

के निमित बहुत ही दौड़ धूप किये हैं। उन्हीं मान्यवर प्यारे फादरों के बीच में से एक, यही प्यारे Rev.Father F.Peal S.J. थे।

80 यही प्यारे फादर की राय अनुसार 27 माई 1926 ई. को यह त्योहार खूब सज धज कर माना गया है जो कि 8 अपरील पर रखने की तैयारी हुई थी। हम दोनों सिस्टरें तीन दिनों की आत्मिक जुदाई करके अपने को इस बड़े परब करने को तैयार किई। महा मान्यवर प्यारे Rev. Father J.Vandemberghe Reetoe S.J. ने हम लोगों की छोटी गिर्जा में बड़ा पवित्र मिस्सा का बलिदान चढ़ाया ओर मान्यवर प्यारे Rev.Father J.Peal S.J. सहायक हुए हैं और चार Seminarists मिस्सा सेवक थे। हम दोनों सिस्टरें अपनी मन्नतें दुहराई हैं। पिछले सुसमाचार के आगे विशेष प्रार्थना हमों के लिये किया जाकर पवित्र पानी छिड़क कर असीस दिई गई। उसी दिन पवित्र मिस्सा में और तीन बजे पवित्र साक्रमेन्त की बड़ी असीस के समय में भी, प्यारे Seminarists लोग, सब गीत और Te Deum गान किये हैं।

81 Superior Ursuline Rev.Mother Antonia और दो तीन दूसरी प्यारी Ursuline Mother लोग भी, प. मिस्सा और प. साक्रमेन्त की बड़ी असीस में हाजिर हुई थीं।

82 अति माननीय प्यारी लोरेटो मादरों के इस छोटे नागपुर से चले जाने के बाद कभी फिर वे हमलोगों के खुश आनन्द के दिनों पर, उपस्थित होने न पाई हैं मगर तौभी यह नहीं कि वे हमलोगों को प्रेम करना छोड़ दिये सो बात कभी नहीं। जौभी कि हम लोग अपने दिलोजान के बड़े धन्यवाद तथा पत्रिका द्वारा उन्हें निमन्त्रण या न्योता दिई है। हमें उनके अनुपस्थित के बारे में यह ठीक मालूम है, कि जब तक उन्हें उपर के प्रधानों या बिषपों से छुट्टी न मिलेगी, तब तलक वे नहीं आ सकती है। तिसपर भी वे अपने मन ही मन और दिल से उपस्थित होकर, इस बड़े ,खुश के उतसव में भागी होने की तेज इच्छा प्रगट करने के मतलब से, सब पुरानी प्यारी मादरों के नाम पर माननीय प्यारी Loreto Rev.Mother Provincial ने और बार 100 रुपये भेज दिई हैं।

83 फिर इस पर्व की याद चिन्ह के लिये माननीय अति प्यारी Ursuline Rev.Antonia Mother Superior की ओर से, एक जोड़े पीतल के गुच्छेदार सुन्दर फूलवाला बड़ा बत्तीदान मिला है। बड़े 2 पर्वों में पवित्र साक्रमेन्त की असीस के समय बेदी पर रखा जाता है।
इन सब प्रेमी उपकारों के लिये आप सब प्यारे फादरों, प्यारे सेमिनारियों तथा प्यारी मादरों को, समस्त हृदय से धन्यवाद देती हैं। परमेश्वर से हम लोगों का तेज निवेदन है कि वह आप ही हम गरीबों बदले में आप लोगों को बड़ा प्रतिफल देवे।

84 हम लोगों का अति प्यारे गुरु और पालक त्मअण्थ्ंजीमत श्रण्च्मंस ैण्श्रण 4 अपरील 1926 ई. से लगातार 28 दिसम्बर 1933 तक, अर्थात् 7 वर्ष 8 महीने लों, हम सन्त अन्ना की बेटियों के बहुत 2 अच्छी रीति से, प्रेमी फिक्र से बदन और आत्मा की परवस्ती किये हैं। उस की छाया में हम लोग जैसे मुर्गी के डैनों तले उस के छोटे चेंगनें। वह बहुत ही साहसी शूरबीर और परिश्रमी था। कैसा ही दुःख बिपत कामों की थकावट क्यों न हो, वह कुछ न कियी से भय खाकर पीछे हटनेवाला नहीं, मगर बड़े बहादुरी से सब बिषयों को अति उत्मोत्तम से पूरा करने में सदा तैयार रहता था फिर उसमें यह एक बड़ा ही अदभुत गुण झलकता रहा कि दुःख उदासी में भी वह सदा अपने को सुखी , मग्न तथा हसंमुख दिखलाता था। वह आप जैसे था, तैसा ही औरों को हमेशा अपनी प्रेमी दयाशीलता की मधुर वाणी, सलाह तथा नमूनों के द्वारा आत्मिक और शारीरिक दुःख सन्ताप से चूर दबे, मन दिल टूटे हुवों को, इतने उत्साहित और तेजी से उस्काके, मानों नई शक्ति पहुंचा कर उठाता था। वह हमों को इतने उत्साहित से प्यारे यीसु, निष्कलंका का मरिया तथा सन्तों की जीवन चरित्र सुना 2 कर हमारे दिलों में विश्वास, भरोसा और प्रेम को बढ़ाने की अथक चेष्टा किया करता रहा। उस का बारम्बार यह

कहना था कि देखिये प्यारी सिस्टरों, यह संसार थोड़े दिनों का है, मगर यह ख्याल मत करना कि हम मोटर गाड़ी या रेल में बैठे 2 सम्म रास्ता से होकर झट स्वर्ग में पैठेंगी सो यह बात नहीं हो सकता है लेकिन रोज 2 शैतान, दुन्या और विशेष कर अपने शरीर के कुइच्छाओं के विरुद्ध में लड़ना होगा। तब केवल जीत का इनाम मुकुट मिलेगा इत्यदि बोलकर हमारे गिरे पड़े निर्बल मन और दिलों में जोर, शांति और खुशी भर देकर हांवाता था। इन के अतिरिक्त उस में ओर बहुत से भले 2 गुराा चमकते थे।

85 ओह ! उस की छाया में रहने के सुभाग्य समय, हम लोगों के लिये दो दिनों का केवल हुआ है। इतने अच्छे ओर अति प्यारे फादर को खो देने से हम लोग निहायत दुःखी हुई हैं परन्तु हम करें क्या? उस के इतने प्रेम तथा बेबयान उपकारों का बदला हम कैसे चुकावें?
निश्चय हमारी ओर से, उस के लिये ईश्वर से बिन्ती चिरौरी, बड़े प्रेम तथा दिल की धन्यवाद की याद चिरकाल लों बनी रहेगी।

86 28 दिसम्बर 1933 को वे अपने प्रधानों, हां ईश्वर ही की पवित्र इच्छा से बदल जाकर के वह हजारीबाग के सन्त स्तानिसलास कोलेज में काम करने के लिये भेजे गये। वहां रहते एक वर्ष भी न बीते कि अचानक वह बिछौने पर दो तीन रेाज तक बेहोश पड़े ऐसा ही 5 अक्टोबर 1934 ई. को स्वर्गवास हो गये हैं। वह जीवन भर अपने को परमेश्वर की बढ़ाई बढ़ाने ओर अनगणित आत्माओं की मुक्ति के निमित अपने को बलि कर डाले हैं सो यीसु अपने करार अनुसार, अवश्य बड़ा 2 इनाम उसे दिया होगा यह बोलकर कि ''हे भले और विश्वास योग्य नौकर, जब कि तू थोड़े कुछ में विश्वास योग्य निकला, तो मैं तुझे बहुत कुछ पर प्रधान करुंगा, अपने स्वामी के आनन्द का भागी हो जा।''

87 जब वह पुरोहित अभिषेक हुए उसी घड़ी अपने देश के प्यारे घरानों की ओर से जितने दान मिले हैं जैसे पवित्र पूजा बलिदान के लिये सुन्दर चमकता कपड़ा, सुन्दर स्टोल, सपलेस, अलब, कटोरा, सिबुरियुम, मोमस्टैंड इत्यदि बेनेदिक्स बेल इत्यदि सब कुछ को हम गरीब सन्त अन्ना की बेटियों के लिये दे दिया है। इस की अलावे हम लोगों की जितनी सिस्टरें और काम करने वाली लड़कियों और कुलियों के सब खर्च वर्च पूरा वर्ष के चावल, दाल, निमक, चाय,चीनी, घी, मिट्टी तेल और

❖